तल्खियां

साहिर लुधियानवी



राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली ६

दो शब्द

उर्दू मे तो खैर, 'साहिर' लुधियानवी का बडा नाम है । उनके कविता सग्रह 'तल्खिया'[1] के बीस-एक सस्करण छप चुके हैं और वे नई पीढी के उर्दू शायरो मे सब से लोकप्रिय शायर समझे जाते है अब हिन्दी मे भी वे किसी परिचय के मोहताज नही रहे[2] । लेकिन प्रत्येक पुस्तक की प्रस्तावना लिखनी या लिखवानी एक परम्परा-सी बन चुकी है और हमारा देश अच्छी बुरी समस्त परम्पराओ के कडे पालन का अभ्यस्त हो चुका है, अतएव इन दो शब्दो द्वारा मैं केवल यह परम्परा ही पूरी कर रहा हूँ ।

'साहिर' की शायरी और उनके व्यक्तित्व के बारे मे, जैसा कि मैं कह चुका हू, मै बहुत कुछ लिख चुका हू । फिर मैने सोचा कि अपनी ओर से कुछ लिखने की बजाय मै उर्दू के उन समालोचको की रायें यहा अकित कर दू जो अब तक 'साहिर' और उनकी शायरी के बारे मे छप चुकी हैं । लेकिन फिर यह सोचकर मैंने यह विचार भी छोड दिया कि जो पाठक 'साहिर' को नही जानते वे उन

---

१ जिसका हिन्दी रूप आपके हाथो मे है । २ इससे पूर्व 'उर्दू के लोकप्रिय शायर' नामक पुस्तक माला मे मैं उनकी रचनाओ का चयन, प्रस्तावना के रूप मे उनका जीवन-चरित्र, और उनकी शायरी पर विस्तार से समालोचना कर चुका हू । और अभी हाल मे उनके फिल्मी गीतों की एक पुस्तक 'गाता जाए बजारा' भी छपी है ।

सूची

१	रद्दे अमल	१२
२	एक मजर	१३
३	एक वाकया	१४
४	यक्सूई	१५
५	शहकार	१६
६	गजल	१७
७	नजू कालेज	१८
८	गजल	२०
९	नामजूरी	२१
१०	खाना आबादी	२३
११	सरजमीने यास	२४
१२	गजल	२७
१३	शिकस्त	२८
१४	गजल	३०
१५	किसीको उदास देखकर	३१
१	मेरे गीत	३४
१७	अशआर	३६
१८	एक शाम	३७
१९	सोचता हूं	३८
२०	नाकामी	४०

५२ ये किसका लहू है ९३
५३ मफाहमत ९५
५४ आज ९६
५५ गजल ९९
५६ नया सफर है पुराने चिराग गुल कर दो १००
५७ शिकस्ते जिंदा १०२
५८ लहू नजू दे रही है हयात १०४
५९ आवाजे आदम १०६
६० गजल १०७
६१ मताअ ए गर १०८
६२ तेरी अ.वाज ११०
६३ गजल ११२
६४ वफादारी ११३
६५ अजनबी बन जाएँ ११४
६६ मेरे अहद के हसीनो । ११५
६७ परछाइयां ११७

५२ ये किसका लहू है ९३
५३ मफाहमत ९५
५४ आज ९६
५५ गजल ९९
५६ नया सफर है पुराने चिराग गुल कर दो १००
५७ शिकस्ते जिंदा १०२
५८ लहू नज्र दे रही है हयात १०४
५९ आवाजे आदम १०६
६० गजल १०७
६१ मसाअ्र ए-गैर १०८
६२ तेरी आवाज ११०
६३ गजल ११२
६४ वफादारी ११३
६५ अजनबी बन जाएँ ११४
६६ मेरे अहद के हसीनो ! ११५
६७ परछाइयां ११७

दुनिया ने तजुर्बात-ओ-हवादिस[1] की शक्ल में
जो कुछ मुझे दिया है वो लौटा रहा हू में

रद्दे अमल[1]

चन्द कलिया निशात की[2] चुनकर
मुद्दतो महवे - याम[3] रहता हू
तेरा मिलना खुशी की बात सही
तुझ से मिलकर उदास रहता हू

---

१ प्रतिक्रिया   २ आनन्द की   ३ गम मे डूबा हुआ

एक मन्ज़र[१]

उफक के[२] दरीचे से किरनो ने झाका
फजा[३] तन गई, रास्ते मुस्कुराये

सिमटने लगी नर्म कुहरे की चादर
जवा शाखसारो ने[४] घूघट उठाये

परिन्दो की आवाज़ से खेत चौके
पुरअसरार[५] लै मे रहट गुनगुनाये

हसी शवनम - आलूद[६] पगडडियो से
लिपटने लगे सब्ज़ पेडो के साये

वो दूर एक टीले पे आचल सा झलका
तसव्वुर मे[७] लाखो दिये झिलमिलाये



१ दृश्य २ क्षितिज के ३ वातावरण ४ जवान शाखाओं ने
५ रहस्यपूर्ण ६ ओस भरी ७ कल्पना मे

एक वाकया[1]

अधियारी रात के आगन मे ये सुबह के कदमो की आहट
ये भीगी-भीगी सद हवा, ये हल्की-हल्की धुदलाहट

गाडी मे हू तनहा[2] महवे-सफर[3] और नीद नही है आखो मे
भूले - बिसरे रूमानो के ख्वाबो की जमी है आखो मे

अगले दिन हाथ हिलाते हैं, पिछली पीतें याद आती है
गुमगश्ता[4] खुशिया आखो मे आसू बनकर लहराती है

सीने के वीरा गोशो मे[5] इक टीस-सी करवट लेती है
नाकाम उमगें रोती है उम्मीद सहारे देती है

वो राह जहन म[6] घूमती ह जिन राहो से आज आया हू
कितनी उम्मीद से पहुचा था, कितनी मायूसी लाया हू



---

१ घटना २ अकेला ३ यात्रा-मग्न ४ खोई हुई ५ वीरान कोने।
मे ६ मस्तिष्क म

यकसूई

अहदे-गुमगश्ता की[1] तसवीर दिखाती क्यो हो ?
एक आवारा-ए-मंजिल को[2] सताती क्यो हो ?
वो हसी अहद[3] जो शर्मिंदा-ए-ईफा न हुआ[4],
उस हसी अहद का मफ़हूम जताती क्यो हो ?
जिन्दगी शो'ला-ए-बेबाक[5] बना लो अपनी,
खुद को खाकस्तरे खामोश[6] बनाती क्यो हो ?
मै तसव्वुफ़ के[7] मराहिल का[8] नही हू कायल[9],
मेरी तसवीर पे तुम फूल चढाती क्यो हो ?
कौन कहता है कि आहे है मसाइब का[10] इलाज,
जान को अपनी अबस[11] रोग लगाती क्यो हो ?
एक सरकश से[12] मोहब्बत की तमन्ना रखकर,
खुद को आईन के[13] फदे मे फसाती क्या हो ?
मै समझता हू तकद्दुस[14] को तमद्दुन[15] का फरेब,
तुम रसूमात को[16] ईमान बनाती क्यो हो ?
जब तुम्हे मुझ से जियादा है ज़माने का खयाल,
फिर मेरी याद मे यू अश्क[17] बहाती क्यो हो ?
तुम म हिम्मत है तो दुनिया से बगावत कर दो ।
वर्ना मा-बाप जहा कहते हैं शादी कर लो ॥

---

१ खोए हुए (बीते) दिनो की २ जिसकी कोई मंजिल न हो ३ प्रण ४ जो पूरा न हुआ ५ धृष्ट शोला ६ मौन राख ७ सूफीवाद के ८ सीढियो का ९ अनुयायी १० विपदाओ का ११ व्यर्थ १२ उद्दण्ड १३ कानून के १४ पवित्रता १५ संस्कृति १६ रीति रिवाजो को १७ आसू

शहकार[1]

मुसव्विर[2] ! मै तेरा शहकार वापस करने आया हू !

अब इन रगीन रुखसारो मे[3] थोडी जर्दिया भर दे,
हिजाब-आलूद[4] नजरो मे जरा बेबाकिया भर दे।

लबो की[5] भीगी-भीगी सल्वटो को मुज़महिल[6] कर दे,
नुमाया रगे पेशानी पे[7] अक्से-सोजे दिल[8] कर दे।

तबस्सुम-आफरी[9] चेहरे मे कुछ सजीदापन भर दे,
जवा सीने की मखरूती[10] उठानें सरनिगू[11] कर दे।

घने बालो को कम कर दे मगर रखशदगी[12] दे दे,
नजर से तम्कनत[13] लेकर मजाके-आजिजी[14] दे दे।

मगर हा, बच के बदले इसे सोफे पे बिठला दे,
यहा मेरी बजाए इक चमकती कार दिखला दे।

---

१ महान कलाकृति २ चित्रकार ३ गालो मे ४ लज्जाशील ५ होंटो की ६ व्याकुल ७ माथे के रग पर ८ हृदय की जलन का प्रतिबिम्ब ९ मुस्कराते १० गोल और नुकीली ११ झुकी हुई १२ चमक १३ अभिमान १४ विनयशीलता

गजल

मोहब्बत तर्क की मैने, गिरेबा सी लिया मैंने
ज़माने ! अब तो खुश हो, ज़हर ये भी पी लिया मैंने

अभी जिन्दा हू लेकिन सोचता रहता हू खलवत मे[1]
कि अब तक किस तमन्ना के सहारे जी लिया मैंने

उन्हे अपना नही सकता मगर इतना भी क्या कम है
कि कुछ मुद्दत हसी ख्वाबो म खोकर जी लिया मैने

बस अब तो दामने-दिल छोड दो बेकार उम्मीदो
बहुत दुख सह लिये मैने, बहुत दिन जी लिया मैंने



---

१ एकात मे

नज़्रे-कालेज[1]

ऐ सरज़मीने-पाक के[2] याराने-नेकनाम[3] !
बा-सद-ख़ुलूस[4] शायरे-आवारा का सलाम ।

ऐ वादि-ए-जमील[5] ! मेरे दिल की धड़कनें,
आदाब कह रही हैं तेरी बारगाह में[6] ।

तू आज भी है मेरे लिए जन्नते ख़याल[7],
हैं तुझ में दफ्न मेरी जवानी के चार साल ।

कुम्हलाये हैं यहा पे मेरी जिन्दगी के फूल,
इन रास्तो में दफ्न हैं मेरी ख़ुशी के फूल ।

तेरी नवाज़िशो को भुलाया न जायेगा,
माज़ी का नक्श[8] दिल से मिटाया न जायेगा ।

तेरी निशातख़ेज़[9] फ़ज़ा-ए-जवां की[10] ख़ैर,
गुलहाए-रंगो बू के[11] हसी कारवा की ख़ैर ।

दौरे-ख़िज़ा में[12] भी तेरी कलिया खिली रहे,
ताहश्र[13] ये हसीन फ़ज़ायें बसी रहे ।

हम एक ख़ार[14] थे जो चमन से निकल गये,
नंगे-वतन[15] थे हद्दे वतन से निकल गये ।

---

१ कालेज की भेंट २ पवित्र भूमि के ३ यशस्वी मित्रो ! ४ सकडो (बडी) शुद्धहृदयता के साथ ५ सुदर घाटी ६ सभा-स्थल मे ७ ख़यालो की जन्नत ८ चित्र ९ आनन्द-दायक १० जवान वातावरण की ११ सुगंधित फूलों के १२ पतझड की ऋतु मे १३ प्रलय तक १४ काटा १५ देश के लिए लज्जा की वस्तु

गाये हैं इस फज़ा मे वफाओं के राग भी,
नग्माते-आतशी से बखेरी है आग भी।

सरकश[1] बने हैं, गीत बगावत के गाये है,
बरसो नये निजाम के[2] नक्शे बनाये हैं।

नग्मा निशाते-रूह का[3] गाया है बारहा[4],
गीतो मे आसुओ को छुपाया है बारहा।

मासूमियो के जुर्म मे बदनाम भी हुए,
तेरे तुफैल[5] मूरिदे-इल्ज़ाम[6] भी हुए।

इस सरज़मी पे आज हम इक बार[7] ही सही,
दुनिया हमारे नाम से बेजार ही सही।

लेकिन हम इन फज़ाओ के पाले हुए तो हैं,
गर यां[8] नही तो यां से निकाले हुए तो है।

(लुध्याना गवर्नमैंट कालेज—१९४३)



ज़िंदगी को बेनियाज़े-आरज़ू करना पडा
आह किन आंखो से अंजामे-तमन्ना देखते

१ उद्दड २ व्यवस्था के ३ आंतरिक आनन्द का गीत ४ बार-बार
५ कारण ६ दोष के भागी ७ बोझ ८ यहाँ

गजल

देखा तो था यूंही किसी गफलत-शिग्रार ने[1]
दीवाना कर दिया दिले - बेइख्तियार ने

ऐ श्रारजू के धुदले खराबो[2] ! जवाब दो
फिर किस की याद आई थी मुझको पुकारने

तुझ को खबर नही मगर इक सादालौह[3] को
बर्बाद कर दिया तेरे दो दिन के प्यार ने

मैं और तुम से तर्के-मोहब्बत की[4] आरजू
दीवाना कर दिया है गमे-रोजगार ने[5]

अब ऐ दिले-तबाह ! तेरा क्या खयाल है
हम तो चले थे काकुले - गेती[6] सवारने



१ लापरवाही जिसका स्वभाव हो २ खंडहरो ३ सरल स्वभाव वाले
४ प्रेम का त्यागने की ५ सांसारिक दुखों ने ६ संसार रूपी केश

माअजूरी[1]

खलवत-ओ-जलवत मे[2] तुम मुझसे मिली हो बारहा,
तुम ने क्या देखा नही, मै मुस्करा सकता नही।

मै कि मायूसी मेरी फितरत मे[3] दाखिल हो चुकी,
जब्र भी खुद पर करूँ तो गुनगुना सकता नही।

मुझ मे क्या देखा कि तुम उल्फत का दम भरने लगी,
मै तो खुद अपन भी कोई काम आ सकता नही।

रूह-अफज़ा[4] है जुनूने-इश्क के[5] नग्मे मगर,
अब मै इन गाये हुए गीतो को गा सकता नही।

मैने देखा है शिकस्ते-साजे-उल्फत का[6] समा,
अब किसी तहरीक[7] पर बरबत[8] उठा सकता नही।

दिल तुम्हारी शिद्दते-एहसास से[9] वाकिफ तो है,
अपने एहसासात से दामन छुडा सकता नही।

तुम मेरी होकर भी बेगाना ही पाओगी मुझे।
मै तुम्हारा होके भी तुम मे समा सकता नही।

---

१ विवशता २ एकात म और सब के सामने ३ स्वभाव मे ४ प्राणवर्धक ५ प्रेमोन्माद ६ प्रेम रूपी बाजे का टूटना ७ प्रेरणा ८ साज ९ अनुभूति की तीव्रता से

गाये हैं मैने खुलूसे-दिल से[१] भी उल्फत के गीत,
अब रियाकारी से[२] भी चाहू तो गा सकता नही।

किस तरह तुमको बना लूं मै शरीके-जिन्दगी[३] ?
मै तो अपनी जिन्दगी का बार[४] उठा सकता नही।

यास की[५] तारीकियो मे[६] डूब जाने दो मुझे,
अब मै शम्मग्र-ए-आरजू को[७] लो बढा सकता नही।



१ शुद्धहृदयता से २ पाखड से ३ जीवन-साथी ४ बोझ
५ निराशा की ६ अधकार मे ७ आकाक्षा-रूपी दीपक

खाना-आबादी

(एक दोस्त की शादी पर)

तराने गूंज उट्ठे है फजा मे शादियानो के,
हवा है इत्र-आगी[1], जर्रा-जर्रा मुस्कुराता है।

मगर दूर, एक अफसुर्दा[2] मका मे सर्द बिस्तर पर,
कोई दिल है कि हर आहट पे यूही चौक जाता है।

मेरी आखो मे आँसू आ गये 'नादीदा आँखों' के[3],
मेरे दिल मे कोई गमगीन नग्मा सरसराता है।

ये रस्मे-इन्किता-ए-अहदे-उल्फत[4], ये हयाते-नौ[5],
मोहब्बत रो रही है और तमद्दुन[6] मुस्कुराता है।

ये शादी खाना आबादी हो, मेरे मोहतरिम[7] भाई,
मुबारिक कह नही सकता, मेरा दिल काप जाता है।

---

१ सुगंधित २ उदास ३ अनदेखी आँखो के ४ प्रेम-काल की समाप्ति की रीति ५ नव जीवन ६ संस्कृति ७ आदरणीय

सरजमीने-यास[१]

जीने से दिल बेजार है,
हर सांस इक आज़ार[२] है।
कितनी हज़ी[३] है जिन्दगी!
अदोहगी[४] है जिन्दगी।
वो बज़्मे-अहबाबे - वतन[५],
वो हमनवायाने - सुख़न[६]।
आते हैं जिस दम याद अब,
करते हैं दिल नाशाद[७] अब।
गुज़री हुईं रंगीनियां,
खोई हुईं दिलचस्पियां।
पहरों रुलाती है मुझे,
अकसर सताती हैं मुझे।
वो ज़मज़में[८], वो चहचहे,
वो रूह-अफ़ज़ा[९] कहकहे।
जब दिल को मौत आई न थी,
यूं बेहिसी[१०] छाई न थी।
वो नाज़नीनाने - वतन[११],
ज़ोहरा - जबीनाने वतन[१२]।
जिन मे से इक रंगीं-कबा[१३],
आतिश-नफ़स[१४] आतिश-नवा[१५]।

---

१ निराशाओ की भूमि २ कष्ट ३ शोकाकुल ४ शोक ग्रस्त ५ स्वदेशीय मित्रो की महफिल ६ सहवाणी (मित्र) ७ दुखी ८ गान ९ प्राण वर्द्धक १० स्पदनहीनता ११ १२ देश की सुदरियां १३ रंगीन वस्त्रो वाली सुदरी १४ ज्वाला मय श्वासो वाली १५ अग्नि भाषी

करके मोहब्बत - आशना[१] ,
रगे - अकीदत - आशना[२] ।
मेरे दिले - नाकाम को,
खूं - गश्ता - ए - आलाम को[३] ।
दागे - जुदाई दे गई,
सारी खुदाई ले गई
उन साअतो की[४] याद मे,
उन राहतो की[५] याद मे ।
मग्मूम - सा रहता हू मैं,
गम की कसक सहता हू मै ।
सुनता हू जब अहबाब से[६] ,
किस्से गमे - अय्याम के[७] ।
बेताब हो जाता हू मै,
आहो मे खो जाता हू मै ।
फिर वो अजीज-ओ-अकृबा[८] ,
जो तोड कर अहदे - वफा[९] ।
अहबाब से मुँह मोड कर,
दुनिया से रिश्ता तोड कर ।
हद्दे - उफक से[१०] उस तरफ,
रगे-शफक से[११] उस तरफ ।
इक वादी-ए खामोश[१२] की,
इक आलमे - बेहोश की[१३] ।
गहराइयो म सो गये,
तारीकियो म[१४] खो गये ।

---

१ प्रेम से परिचित २ श्रद्धा के रग से परिचित ३ दुखो का मारा हुआ ४ क्षणो की ५ सुखो की ६ मित्रो से ७ दिनो के (सासारिक) दुखो के ८ मित्र ९ प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा १० क्षितिज की सीमा से ११ ऊषा के रग से १२ निस्तब्ध घाटी १३ बेहोशी की हालत की १४ अधकार म

उन का तसव्वुर नागहा,
लेता है दिल मे चुटकिया।
और ख् रुलाता है मुझे
वेकल वनाता है मुझे।
वो गाव की हमजोलिया,
मफलूक[1] दहकाँ-जादिया[2]।
जो दस्ते - फर्ते - यास से[3],
और यूरिशे - इफलास से[4]।
इस्मत लुटाकर रह गई,
खुद को गवा कर रह गई।
गमगी जवानी वन गई,
रुसवा[5] कहानी बन गई।
उनसे कभी गलियो मे अब,
होता हू मै दोचार जव।
नजरे झुका लेता हू मै,
खुद को छुपा लेता हू मै।
कितनी हजी है जिन्दगी।
अन्दोहगी है जिन्दगी॥

---

१ निधन २ किसानो की वेटिया ३ निराशा की अधिकता (के हाथ) से
४ निधनता के आक्रमण (अधिकता) से ५ वदनाम

गजल

खुद्दारियो के खून को अर्जा[1] न कर सके
हम अपने जौहरो को[2] नुमाया न कर सके

होकर खराबे - मै[3] तेरे गम तो भुला दिये
लेकिन गमे - हयात का दरमा[4] न कर सके

टूटा तलिस्मे-अहदे-मोहब्बत[5] कुछ इस तरह
फिर आरजू की शम्मअ फरोजा[6] न कर सके

हर शै करीब आके कशिश[7] अपनी खो गई
वो भी इलाजे - शौके - गुरेजा[8] न कर सके

किस दर्जा दिलशिकन[9] थे मोहब्बत के हादसे
हम जिन्दगी मे फिर कोई अरमाँ न कर सके

मायूसियो ने छीन लिये दिल के वलवले
वो भी निशाते - रूह का[10] सामाँ न कर सके

---

१ सस्ता २ गुणो को ३ शराब के हाथो खराब होकर ४ जीवन की चिन्ताओ का इलाज ५ प्रेम-काल का जादू ६ प्रकाशमान ७ आकर्षण ८ विमुख प्रेम का इलाज ९ हृदय भजक १० आत्मा का तृप्ति या हर्ष का

ग़ज़ल

हवस - नसीब[1] नजर को कही करार[2] नही
मै मुन्तजिर हू मगर तेरा इन्तज़ार नही

हमी से रगे - गुलिस्ता हमी से रगे-बहार
हमी को नज्मे - गुलिस्ता पे[3] इख्तियार नही

अभी न छेड मोहब्बत के गीत ऐ मुतरिब[4]
अभी हयात का[5] माहौल[6] खुशगवार नही

तुम्हारे अहदे-वफा को[7] मै अहद क्या समझू
मुझे खुद अपनी मोहब्बत का एतबार नही

न जाने कितने गिले[8] इसमे मुज़तरिब[9] है नदीम[10]
वो एक दिल जो किसी का गिला-गुज़ार[11] नही

गुरेज का नही कायल हयात से[12], लेकिन
जो सच कहू तो मुझे मौत नागवार[13] नही

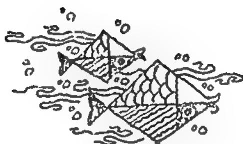
ये किस मुकाम पे पहुचा दिया जमाने ने
कि अब हयात पे तेरा भी इख्तियार नही

---

१ लोलुपता प्रिय २ चैन ३ उद्यान की व्यवस्था पर ४ गायक
जीवन का ६ वातावरण ७ वफादार रहने की प्रतिज्ञा को ८ शिकायतें
आकुल १० साथी ११ जो किसी की शिकायत न करता हो १२ जीवन
भागने के पक्ष मे नही हूँ १३ अप्रिय

रेगज़ारो मे[१] बगूलो के सिवा कुछ भी नही,
साया-ए-अब्रे-गुरेज़ा से[२] मुझे क्या लेना ?
बुझ चुके हैं मेरे सीने मे मोहब्बत के कवल,
अब तेरे हुस्ने-पशेमा से[३] मुझे क्या लेना ॥

तेरे आरिज़ पे ये ढलके हुए सीमी[४] आसू,
मेरी अफसुर्दगी-ए-गम का[५] मुदावा[६] तो नही ।
तेरी महज़ून निगाहो का[७] पयामे-तजदीद[८],
इक तलाफी[९] ही सही, मेरी तमन्ना तो नही ॥



१ मरुस्थलो मे २ भागते हुए बादल की छाया से ३ लज्जित सौंदय से
४ रजत ५ ग्रम की उदासी का ६ इलाज ७ लज्जित नज़रों का
८ नवीकरण का सदेश ९ क्षतिपूर्ति

शिकस्त

अपने सीने से लगाए हुए उम्मीद की लाश,
मुद्दतो जीस्त को[1] नाशाद[2] किया है मैने।

तूने तो एक ही सदमे से किया था दोचार,
दिल को हर तरह से वर्बाद किया है मैने।
जब भी राहो मे नजर आए हरीरी मलबूस[3],
सद आहो मे तुझे याद किया है मैने।।

और अब जबकि मेरी रूह की पहनाई मे[4],
एक सुनसान-सी मग्मूम[5] घटा छाई है।
तू दमकते हुए आरिज़ की[6] शुआएँ[7] लेकर,
गुलशुदा[8] शम्मएँ जलाने को चली आई है।।

मेरी महबूब ये हगामा-ए-तजदीदे-वफा[9],
मेरी अफसुर्दा[10] जवानी के लिए रास नही।
मैने जो फूल चुने थे तेरे कदमो के लिए,
उनका धुदला-सा तसव्वुर[11] भी मेरे पास नहीं।।

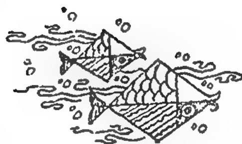
एक यखवस्ता[12] उदासी है दिलो-जा पे मुहीत[13],
अब मेरी रूह मे बाकी है न उम्मीद न जोश।
रह गया दब के गिरावार सलासिल के[14] तले,
मेरी दरमादा[15] जवानी की उमगो का खरोश[16]।।

---

१ जीवन को २ खिन्न ३ रेशमी लिबास ४ आत्मा की विस्तीर्णता मे ५ दुखी ६ गालो की ७ रश्मिया ८ बुझी हुई ९ प्रेम के नवीकरण का हगामा १० उदास, बुझी हुई ११ कल्पना १२ बर्फ की तरह जमी हुई १३ छाई हुई १४ बोझिल जजीरों का १५ दुखी १६ जोश

रेगजारो म[१] बगूलो के सिवा कुछ भी नही,
साया-ए-अब्रे-गुरेज़ा से[२] मुझे क्या लेना ?
बुझ चुके हैं मेरे सीने म मोहब्बत के कवल,
अब तेरे हुस्ने-पशेमा से[३] मुझे क्या लेना ॥

तेरे आरिज़ पे ये ढलके हुए सीमी[४] आसू,
मेरी अफसुर्दगी-ए-गम का[५] मुदावा[६] तो नही ।
तेरी महजून निगाहो का[७] पयामे-तजदीद[८],
इक तलाफी[९] ही सही, मेरी तमन्ना तो नही ॥



१ मरुस्थलो म २ भागते हुए बादल की छाया से ३ लज्जित सौदर्य से
४ रजत ५ गम की उदासी का ६ इलाज ७ लज्जित नज़रो का
८ नवीकरण का सदेश ९ क्षतिपूर्ति

गजल

हवस - नसीब[1] नजर को कही करार[2] नही
मैं मुन्तजिर हू मगर तेरा इन्तज़ार नही

हमी से रगे - गुलिस्तां हमी से रगे-बहार
हमी को नज्मे - गुलिस्ता पे[3] इख्तियार नही

अभी न छेड मोहब्बत के गीत ऐ मुतरिब[4]
अभी हयात का[5] माहौल[6] खुशगवार नही

तुम्हारे अहदे-वफा को[7] मै अहद क्या समझू
मुझे खुद अपनी मोहब्बत का एतबार नही

न जाने कितने गिले[8] इसमे मुज़तरिब[9] हैं नदीम[10]
वो एक दिल जो किसी का गिला-गुज़ार[11] नही

गुरेज का नही कायल हयात से[12], लेकिन
जो सच कहू तो मुझे मौत नागवार[13] नही

ये किस मुकाम पे पहुचा दिया जमाने ने
कि अब हयात पे तेरा भी इख्तियार नही

---

१ लोलुपता प्रिय २ चन ३ उद्यान की व्यवस्था पर ४ गायक ५ जीवन का ६ वातावरण ७ वफादार रहने की प्रतिज्ञा को ८ शिकायतें ९ आकुल १० साथी ११ जो किसी की शिकायत न करता हो १२ जीवन से भागने के पक्ष मे नही हूँ १३ अप्रिय

किसी को उदास देखकर[1]

तुम्हे उदास सी पाता हू मैं कई दिन से,
न जाने कौन से सदमे उठा रही हो तुम?
वो शोखिया वो तबस्सुम, वो कहकहे न रहे,
हर एक चीज को हसरत से देखती हो तुम।
छुपा - छुपा के खमोशी मे अपनी बेचैनी,
खुद अपने राज की तशहीर[1] बन गई हो तुम।

मेरी उमीद अगर मिट गई तो मिटने दो,
उमीद क्या है बस इक पेशो-पस[2] है कुछ भी नही।
मेरी हयात की गमगीनियों का गम न करो,
गमे हयात[3] गमे यक-नफस[4] है कुछ भी नही।
तुम अपने हुस्न की रअनाइयो पे[5] रहम करो,
वफा फरेब है, तूले-हवस[6] है, कुछ भी नही।

मुझे तुम्हारे तगाफुल से[7] क्यो शिकायत हो,
मेरी फना[8] मेरे एहसास का[9] तकाजा है।
मैं जानता हू कि दुनिया का खौफ है तुमको,
मुझे खबर है, ये दुनिया अजीब दुनिया है।
यहां हयात के पर्दे मे मौत पलती है,
शिकस्ते - साज की[10] आवाज रुहे - नग्मा है।

---

१ विज्ञापन २ दुविधा ३ जीवन का गम ४ क्षण भर का गम (एक श्वास से सम्बधित) ५ रमणीयताओ पर ६ लोलुपता की दीघता ७ उपेक्षा से ८ मृत्यु ९ चेतना का १० साज के टूटने की

मुझे तुम्हारी जुदाई का कोई रंज नही,
मेरे ख़याल की दुनिया मे मेरे पास हो तुम।
ये तुमने ठीक कहा है, तुम्हे मिला न करू,
मगर मुझे ये बता दो कि क्यो उदास हो तुम ?
खफा न होना मेरी जुर्रते - तखातुब पर[१],
तुम्हे खबर है मेरी जिन्दगी की ग्राम हो तुम।

मै अपनी रूह की हर इक खुशी मिटा लूगा,
मगर तुम्हारी मसरत मिटा नही सकता।
मैं खुद को मौत के हाथो मे सौंप सकता हू,
मगर ये बारे - मसाइब[२] उठा नही सकता।
तुम्हारे गम के सिवा और भी तो गम हैं मुझे,
निजात जिनसे मै इक लहजा[३] पा नही सकता।

ये ऊचे - ऊचे मकानो की डयोढियो के तले,
हर एक गाम पे[४] भूके भिकारियो की सदा[५]।
हर एक घर मे ये इफलास और भूख का शोर,
हर एक सिम्त[६] ये इन्सानियत की आहो-बका[७]।
ये कारखानो मे लोहे का शोरो-गुल जिसमे,
है दफ्न लाखो गरीबो की रूह का नग्मा।

ये शाहराहो पे[८] रगीन सारियो की झलक,
ये झोपडो म गरीबो के बेकफन लाशे।
ये माल-रोड पे कारो की रेल-पेल का शोर,
ये पटरियो पे गरीबो के जर्द-रू बच्चे।

---

१ सबोधन के दु साहस पर २ मुसीबतो का बोझ ३ क्षण भर के लिए
४ कदम पर ५ आवाज ६ ओर ७ आह, फर्य्यादें ८ राज्य-पथो पर

गली गली मे ये बिकते हुए जवा चेहरे,
हसीन आखो मे अफसुरदगी-सी[1] छाई हुई।
ये जग और ये मेरे वतन के शोख जवा,
खरीदी जाती हैं उठती जवानिया जिनकी।
ये बात-बात पे कानूनो-ज़ाब्ते की गिरफ्त[2],
ये जिल्लतें, ये गुलामी, ये दौरे - मजबूरी।

ये गम बहुत हैं मेरी जिन्दगी मिटाने को,
उदास रहके मेरे दिल को और रज न दो



फिर न कीजे मेरी गुस्ताख - निगाहो का गिला
देखिये आपने फिर प्यार से देखा मुझको

---

१ मलिनता २ पकड

मेरे गीत

मेरे सरकश[१] तराने सुनके दुनिया ये समझती है,
कि शायद मेरे दिल को इश्क के नग्मो से नफरत है।
मुझे हगामा - ए - जगो - जदल मे[२] कैफ[३] मिलता है,
मेरी फितरत[४] को खूरेजी[५] के अफसानो से रगबत[६] है।
मेरी दुनिया मे कुछ वकअत[७] नही है रक्सो-नग्मे की[८],
मेरा महबूब नग्मा[९] शोरे - आहगे - बगावत[१०] है॥

मगर ऐ काश! देखें वो मेरी पुरसोज[११] रातो को,
मैं जब तारो पे नजरें गाडकर आसू बहाता हू।
तसव्वुर बनके[१२] भूली वारदातें[१३] याद आती हैं
तो सोजो - दर्द की शिद्दत से[१४] पहरो तिलमिलाता हू।
कोई ख्वाबो म, ख्वाबीदा[१५] उमगो को जगाती है,
तो अपनी जिन्दगी को मौत के पहलू म पाता हू॥

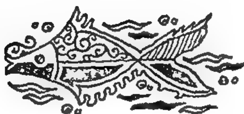
मै शायर हू मुझे फितरत के[१६] नज्जारो से उल्फत है,
मेरा दिल दुश्मने नग्मा सराई[१७] हो नही सकता।
मुझे इसानियत का दर्द भी बख्शा है कुद्रत ने,
मेरा मकसद[१८] फकत[१९] शोला-नवाई[२०] हो नही सकता।
जवा हू मै जवानी लग्जिशो का[२१] एक तूफा है,
मेरी बातो मे रगे - पारसाई[२२] हो नही सकता।

---

१ विद्रोहपूर्ण २ युद्ध और सघर्ष के हगामे मे ३ आनन्द ४ स्वभाव ५ खून बहाना ६ रुचि ७ महत्व ८ नृत्य और सगीत की ९ प्रिय सगीत १० विद्रोह के सगीत का शोर ११ दर्द भरी १२ कल्पना बनकर १३ घटनाए १४ तीव्रता से १५ सोई हुई १६ प्रकृति के १७ गीत गाने का विरोधी १८ उद्देश्य १९ केवल २० आग बरसाना २१ भूलो, गिरावटो, कमजोरियो का २२ पवित्रता का रग

मेरे सरकश तरानो की हकीकत है तो इतनी है,
कि जब मैं देखता हू भूक के मारे किसानो को,
गरीबो, मुफलिसो को, बेकसो को, बेसहारो को,
सिसकती नाजनीनो को, तडपते नौजवानो को,
हुकूमत के तशद्दुद को[1], अमारत के[2] तकब्बुर को[3],
किसी के चीथडा को और शहनशाही खजानो को,

तो दिल तावे-निशाते-बज्मे-इश्रत[4] ला नही सकता।
मैं चाहू भी तो ख्वाब-आवर[5] तराने गा नही सकता॥



१ अत्याचार २ धन दौलत ३ घमड को ४ वैभवशाली समाज के ऐश्वय को सहन नही कर सकता ५ सुलाने वाले

अशआर[१]

हरचद[२] मेरी कुव्वते-गुफ्तार[३] है महबूस[४],
खामोश मगर तबअ़ए-खुदआरा[५] नही होती।

भाअ़मूरा-ए एहसास[६] मे है हश्र-सा बर्पा[७],
इन्सान की तजलील[८] गवारा[९] नही होती।

नाला हू[१०] मै बेदारी ए एहसास के[११] हाथो,
दुनिया मेरे अफकार की[१२] दुनिया नही होती।

बेगाना-सिफत[१३] जादा-ए-मजिल से[१४] गुज़र जा,
हर चीज सजावारे-नजारा[१५] नही होती।

फितरत की मशीयत[१६] भी बडी चीज है लेकिन,
फितरत कभी बेबस का सहारा नही होती।

---

१ शेर २ यद्यपि ३ वाक शक्ति ४ बन्दी ५ आत्म प्रदर्शन वाली प्रकृति (स्वभाव) ६ अनुभूतियों की बस्ती ७ प्रलय मची हुई है ८ अपमान ९ सहन १० तग हूँ ११ अनुभूति की चेतना के १२ चिंतन की १३ अपरिचिता की तरह १४ मजिल के रास्ते से १५ जिसे देखना अनिवार्य हो १६ इच्छा

एक शाम

क़ुमक़ुमों की[1] ज़हर उगलती रोशनी,
संगदिल पुरहौल[2] दीवारों के साए।
आहनी[3] बुत देव - पैकर[4] अजनबी,
चीख़ती चिंघाड़ती सूनी सराए।
रूह उलझी जा रही है, क्या करूं ?

चार जानिब अर्तआशे - रंग - ओ - नूर[5]
चार जानिब अजनबी बाहों के जाल।
चार जानिब खूंफ़शा[6] परचम[7] बुलंद,
मैं, मेरी ग़ैरत, मेरा दस्ते - सवाल[8]।
ज़िन्दगी शर्मा रही है, क्या करूं ?

कारगाहे - ज़ीस्त के[9] हर मोड़ पर,
रूहे-चंगेज़ी[10] बरअफ़गंदा-नक़ाब[11]।
थाम ऐ सुबहे-जहाने-नौ[12] की ज़ौ[13],
जाग ऐ मुस्तक़बिले-इन्सा के[14] ख़्वाब।
आस डूबी जा रही है, क्या करूं ?

---

१ बिजली के हंडो की २ पत्थर दिल, भयभीत करने वाली ३ लौह
४ देवों के से आकार वाले ५ चारों ओर रंग और प्रकाश की कंपकंपाहट है
६ लहू बिखेरते हुए ७ झंडे ८ मांगने वाला हाथ ९ ज़िंदगी के कारख़ाने
(क्षेत्र) के १० चंगेज़ (ज़ालिम बादशाह) की आत्मा ११ नक़ाब उलटे हुए
१२ नव संसार की सुबह १३ प्रकाश १४ मनुष्य के भविष्य के

सोचता हू

सोचता हू कि मोहब्बत से किनारा कर लू,
दिल को बेगाना-ए-तरगीबो-तमन्ना[१] कर लू।

सोचता हू कि मोहब्बत है जुनूने - रुसवा[२],
चद बेकार से बेहूदा खयालो का हुजूम।
एक आजाद को पाबद बनाने की हवस,
एक बेगाने को अपनाने की सग्रइ - ए- मौहूम[३]।

सोचता हू कि मोहब्बत है सरूरो - मस्ती,
इसकी तनवीर से[४] रोशन है फजाए-हस्ती[५]।

सोचता हू कि मोहब्बत है बशर की फितरत[६],
इसका मिट जाना मिटा देना बहुत मुश्किल है
सोचता हू कि मोहब्बत से है ताबिदा[७] हयात[८],
आप ये शमग्र बुझा देना बहुत मुश्किल है।

सोचता हू कि मोहब्बत पे कडी शर्ते है,
इस तमद्दुन मे[९] मसर्रत पे बडी शर्ते हैं।

सोचता हू कि मोहब्बत है इक अफसुर्दा-सी[१०] लाश,
चादरे - इज्जतो - नामूस मे[११] कफनाई हुई।
दौरे - सर्माया की[१२] रौंदी हुई रुसवा हस्ती,
दरगहे मजहबो - इखलाक से[१३] ठुकराई हुई।

---

१ अभिलाषा तथा प्रेरणा से रहित २ बदनाम उन्माद ३ भ्रमात्मक प्रयत्न ४ प्रकाश से ५ जीवन का वातावरण ६ मानव प्रकृति ७ दीप्त ८ जीवन ९ सस्कृति मे १० खिन्न सी ११ इज्जत रूपी चादर मे १२ पूजी (के आधिपत्य) के युग की १३ धर्म और नतिकता की कचहरी से

सोचता हू कि बशर[1] और मोहब्बत का जुनू[2],
ऐसे बोसीदा तमद्दुन म है इक कारे - ज़बू[3] ।

सोचता हू कि मोहब्बत न बचेगी जिन्दा,
पेश-अर्जा-वक्त कि[4] सड जाय ये गलती हुई लाश,
यही बेहतर है कि बेगाना - ए - उल्फत होकर[5],
अपने सीने में करू जज्बा-ए-नफरत की[6] तलाश।

और सौदा-ए-मोहब्बत से[7] किनारा कर लू ।
दिल को बेगाना-ए-तरगीबो-तमन्ना कर लू ॥



मौत आ गई न हो मेरे जौके - उमीद को[8]
महरूमियो मे कैफ-सा[9] पाने लगा हू मै

---

१ मानव २ उन्माद ३ बुरा काय ४ इस से पूव कि ५ प्रेम से हाथ खीच कर ६ घृणा भाव की ७ प्रेमो माद से ८ आशावाद को ९ आनन्द-सा

नाकामी

मैंने हरचंद गमे-इश्क को खोना चाहा,
गमे-उल्फत गमे-दुनिया में समोना चाहा।

वही अफसाने मेरी सिम्त[1] रवा[2] है अब तक,
वही शोले मेरे सीने मे निहा[3] है अब तक।
वही बेसूद खलिश[4] है मेरे सीने मे हनोज[5],
वही बेकार तमन्नायें जवा हैं अब तक।
वही गेसू[6] मेरी रातो पे है बिखरे-बिखरे,
वही आखें मेरी जानिब निगरा हैं[7] अब तक।

कसरते-गम[8] भी मेरे गम का मुदावा[9] न हुई,
मेरे बेचैन खयालो को सुकू[10] मिल न सका।
दिल ने दुनिया के हर इक दर्द को अपना तो लिया,
मुजमहिल रूह को[11] अदाजे-जुनू[12] मिल न सका।

मेरी तखईल का[13] शीराजा-ए बरहम[14] है वही,
मेरे बुझते हुए एहसास का आलम[15] है वही।
वही बेजान इरादे वही बेरंग सवाल,
वही बेरूह कशाकश[16] वही बेचैन खयाल।

आह! इस कश्मकशे-सुबहो-मसा का[17] अंजाम।
मैं भी नाकाम, मेरी सओ-ए अमल[18] भी नाकाम॥

---

१ ओर २ अग्रसर ३ छुपे हुए ४ चुभन ५ अभी ६ केश ७ देख रही हैं ८ गम की अधिकता ९ इलाज १० शांति ११ व्याकुल आत्मा को १२ उन्माद का ढग १३ कल्पना का १४ बिखरा क्रम १५ स्थिति १६ निर्जीव खीचातानी १७ सुबह और शाम की खीचा तानी १८ काम करने की कोशिश

मुझे सोचने दे

मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड़,
अपनी मायूस उमगो का फसाना न सुना।

ज़िन्दगी तल्ख सही, जहर सही, सम[1] ही सही,
दर्दो आजार[2] सही, जब्र सही, गम ही सही।
लेकिन इस दर्दो-गमो-जब्र[3] की वुसअत[4] को तो देख,
ज़ुल्म की छाओ मे दम तोडती खलकत को तो देख।
अपनी मायूस उमगो का फसाना न सुना
मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड।
जलसा गाहो मे ये दहशतज़दा[5] सहमे अबोह[6],
रहगुज़ारो पे फलाकतज़दा[7] लोगो के गिरोह।
भूख और प्यास से पजमुर्दा[8] सियहफाम[9] जमी,
तीरा ओ-तार मका[10] मुफलिसो बीमार मकी[11]।
नौ ए-इन्सा मे[12] ये सर्माया-ओ मेहनत[13] का तजाद[14],
अम्नो तहज़ीब के परचम तले कौमो का फसाद।
हर तरफ आतिशो-आहन का[15] ये सलावे-अज़ीम[16],
नित नये तर्ज़ पे होती हुई दुनिया तकसीम।
लहलहाते हुए खेतों पे जवानी का समाँ,
और दहकान[17] के छप्पर मे न बत्ती न धुआ।

---

१ विप २ पीडा तथा रोग ३ दद, गम, अत्याचार ४ विशालता ५ आतकित ६ जनसमूह ७ निधनता के मारे हुए ८ म्लान ९ काली १० तग और अधेरे मकान ११ वासी १२ मानव जाति १३ पजी तथा परिश्रम १४ भेद, टकराव १५ आग और लोह का १६ प्रबल बाढ १७ किसान

ये फलक - बोस[1] मिलें दिलकशो-सीमी[2] बाज़ार,
ये गलाज़त पे[3] झपटते हुए भूखे नादार।
दूर साहिल पे वो शफ्फाफ[4] मकानो की कतार,
सरसराते हुए पर्दों मे सिमटते गुलज़ार[5]।
दरो - दीवार पे अनवार का[6] सैलाब रवा[7],
जैसे इक शायरे - मदहोश के[8] ख्वाबो का जहा।
ये सभी क्यो है ? ये क्या है ? मुझे कुछ सोचने दे,
कौन इसा का खुदा है, मुझे कुछ सोचने दे।

अपनी मायूस उमगो का फसाना न सुना।
मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड॥



१ गगनचुम्बी २ मनोहर और रजत ३ गन्दगी पर ४ उज्ज्वल
५ पुष्पवाटिकायें ६ प्रकाश का ७ बहती बाढ ८ मदहोश

अशआर

अकाइद[१] वहम हैं, मजहब खयाले-खाम[२] है साकी
अजल से[३] जहने-इन्सा[४] वस्ता-ए-ओहाम[५] है साकी

'हकीकत-आशनाई'[६] अस्ल म गुमकर्दा-राही[७] है
उरूसे - आगही[८] पर्वर्दा-ए-इबहाम[९] है साकी

मुबारक हो जईफी को[१०] खिरद की[११] फल्सफादानी[१२]
जवानी बे नियाज - इबरते - अजाम[१३] है साकी

हवस होगी असीरे - हल्का - ए - नेको - बदे - आलम[१४]
मोहब्बत मावरा - ए - फिक्रे - नगो - नाम[१५] है साकी

अभी तक रास्ते के पेचो खम से दिल धडकता है
मेरा जौके-तलब[१६] शायद अभी तक खाम[१७] है साकी

वहा भेजा गया हू चाक करने पर्दा-ए-शब को[१८]
जहा हर सुबह के दामन पे अक्से-शाम[१९] है साकी

मेरे सागर मे मै है और तेरे हाथो म वरबत[२०] है
वतन की सरजमी म भूक से कुहराम[२१] है साकी

जमाना बर-सरे-पैकार[२२] है पुरहौल[२३] शो'लो से
तेरे लब पर अभी तक नग्मा ए-खय्याम[२४] है साकी

---

१ मान्यतायें २ अपरिपक्व धारणा ३ आदिकाल से ४ मानव मस्तिष्क ५ भ्रम ग्रस्त ६ सत्य का ज्ञान ७ मार्ग भूलना ८ ज्ञान रूपी दुल्हन ९ भ्रमो की पाली हुई १० बुढापे को ११ अक्ल की १२ दार्शनिकता १३ परिणाम के भय से उदासीन १४ ससार की (मे) अच्छाई बुराई के घेरे की बन्दी १५ नाम और बदनामी की चिन्ता से ऊपर १६ अन्वेषण या तलाश की अभिरुचि १७ अपक्व १८ रात के पर्दे को १९ शाम का प्रतिबिम्ब २० साज २१ शोर २२ सघर्षशील २३ भयकर २४ उमर खैयाम का नग्मा (शराब और प्रेयसी का गुण-गान)

सुबहे-नौरोज़[1]

फूट पडी मशरिक से किरनें

हाल बना माज़ी[2] का फसाना गूंजा मुस्तकबिल का तराना
भेजे है अहबाब ने[3] तोहफे अटे पडे हैं मेज़ के कोने
दुल्हन बनी हुई हैं राहे
जश्न मनाओ साल ए-नौ के[4]

निकली है बगले के दर से[5]

इक मुफलिस दहकान[6] की बेटी अफसुर्दा, मुर्झाई हुई सी
जिस्म के दुखते जोड दबाती आचल से सीने को छुपाती
मुट्ठी मे इक नोट दबाये
जश्न मनाओ साल ए-नौ के

भूके, ज़र्द, गदागर[7] बच्चे

कार के पीछे भाग रहे हैं वक्त से पहले जाग उठे हैं
पीप भरी आखें सहलाते सर के फोडो को खुजलाते
वो देखो कुछ और भी निकले
जश्न मनाओ साल ए नौ के



मुझे मालूम है अजाम रूदादे-मोहब्बत का[8]
मगर कुछ और थोडी देर सई-ए-रायगा[9] कर लू

१ नव दिवस का प्रभात २ अतीत का ३ मित्रो ने ४ नव वर्ष के ५ दरवाजे से ६ किसान ७ भिखारी ८ प्रेम कथा का ९ व्यर्थ प्रयत्न

गुरेज*

मेरा जुनूने - वफा[1] है जवाल - आमादा[2] ,
शिकस्त हो गया तेरा फुसूने-जेबाई[3] ।
उन आरजूओ पे छाई है गर्दे-मायूसी[4] ,
जिन्होने तेरे तवस्सुम म परवरिश[5] पाई ।
फरेबे-शौक के रगी तलिस्म[6] टूट गये,
हकीकतो ने[7] हवादिस से[8] फिर जिला[9] पाई ।
सुकूनो ख्वाब के[10] पर्दे सरकते जाते हैं,
दिमागो-दिल मे है वहशत की[11] कारफर्माई[12] ।
वो तारे जिनमे मोहब्बत का नूर[13] ताबा[14] था ।
वो तारे डूब गये लेके रगो-रअनाई[15] ।
भुला गई थी जिन्हे तेरी मुल्तफित[16] नजरें,
वो दर्द जाग उठे फिर से लेके अगडाई ।
अजीब आलमे अफसुदगी[17] है रू-ब-फरोग[18],
न अब नजर को तकाजा न दिल तमन्नाई ।
तेरी नजर, तेरे गेसू, तेरी जबी[19], तेरे लब,
मेरी उदास तबीयत है सबसे उकताई ।
मैं जिन्दगी के हकायक से[20] भाग आया था,
कि मुझको खुद मे छुपा ले तेरी फुसू जाई[21] ।

*विरतता

१ प्रेमोन्माद २ घट रहा है ३ शृगार का जादू ४ निराशा की धूल ५ पालन-पोषण ६ जादू ७ वास्तविकताओ ने ८ दुर्घटनाओ से ९ चमक १० सपने और शान्ति के ११ झुंझलाहट की १२ श्रम-शीलता १३ प्रकाश १४ ज्योतिमय १५ रग और रूप १६ कृपालु १७ उदासी की स्थिति १८ बढता हुआ १९ माया २० वास्तविकताओं मे २१ जादूगरी

मगर यहा भी तआक्कुब किया हवायस ने,
यहा भी मिल न सकी जन्नते - शकेबाई।
हर एक हाथ मे लेकर हजार आईने,
हयात[1] बन्द दरीचो से भी गुजर आई।
मेरे हर एक तरफ एक शोर गूज उठा,
और उसम डूब गई इशरतो की[2] शहनाई।
कहा तलक[3] कोई जिन्दा हकीकतो से बचे,
कहा तलक करे छुप छुप के नग्मा पैराई[4]।
वो देख सामने के पुरशिकोह[5] ऐवा से[6],
किसी किराये की लडकी की चीख टकराई।
वो फिर समाज ने दो प्यार करने वालो को,
सजा के तौर पर बख्शी तवील[7] तनहाई।
फिर एक तीरा-ओ-तारीक[8] झोपडी के तले,
सिसकते बच्चे पे बेवा की आख भर आई।
वो फिर बिकी किसी मजदूर की जवा बेटी,
वो फिर झुका किसी दर पे गरूरे-बरनाई[9]।
वो फिर किसानो के मजमे पे गन-मशीनो से,
हुकूक याफ्ता[10] तबके ने[11] आग बरसाई।
सुकूते - हल्का - ए - जिंदा से[12] एक गूंज उठी,
और उसके साथ मेरे साथिया की याद आई।
नही-नही मुझे यू मुलतफित नजर से न देख,
नही नही मुझे अब ताबे-नग्मा-पैराई[13]।
मेरा जुनूने - वफा है जवाल-आमादा,
शिकस्त हो गया तेरा फुसूने - जेबाई।

१ जिन्दगी २ आनन्दो की ३ तक ४ गीत छेडना ५ वैभव शाली ६ महल से ७ दीर्घ ८ अन्धकारपूर्ण ९ यौवन का गौरव १० स्वत्वधारी ११ वर्ग ने १२ कारागार के अहाते के सन्नाटे से १३ गीत छेडने की शक्ति

कुछ बातें

देश के ग्रदवार की[१] बातें करें,
ग्रजनबी सरकार की बातें करें।
ग्रगली दुनिया के फसाने छोडकर,
इस जहन्नुमजार[२] की बातें करें।
हो चुके ग्रौसाफ पर्दे के वयाँ,
शाहदे - बाजार की[३] बातें करें।
दहर के[४] हालात की बाते करें।
इस मुसलसल रात की बातें करें।
मन-ग्रो-सल्वा का[५] जमाना जा चुका,
भूक ग्रौर ग्राफात की[६] बातें करें।
ग्राग्रो परखें दीन के ग्रौहाम को[७],
इल्मे - मौजूदात की[८] बातें करें।
जाबिर - ग्रो - मजबूर की बाते करें,
इस कुहन[९] दस्तूर की[१०] बातें करें।
ताजे - शाही के कसीदे[११] हो चुके,
फाकाकश जमहूर की[१२] बातें करें।
गिरने वाले कस्र की[१३] तौसीफ[१४] क्या ?
तेशा-ए-मजदूर की[१५] बातें करें।

---

१ नरिद्रताग्रो की २ नरक भूमि ३ वेश्याग्रो की ४ ससार के ५ वह जमाना जब खुदा ग्रपने नेक बन्दो के लिए ग्रासमान से फरिश्तो के हाथ खाना भेजता था (इस्लामी रिवायत) ६ ग्राफतो की ७ धर्म के भ्रम को ८ वर्तमान वस्तुग्रो के ज्ञान की ९ पुराने १० रिवाज की ११ प्रशसा काव्य (प्रशसा मे) १२ भूखी जनता की १३ राजमहल की १४ गुण गान १५ मजदूर के फावडे की ('फरहाद' की ग्रोर सकेत है ग्रौर समाजवादी युग की ग्रोर भी)

चकले

ये कूचे ये नीलामघर दिलकशी के,
ये लुटते हुए कारवां जिन्दगी के,
कहां हैं कहां हैं मुहाफिज खुदी के[१]
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक[२] कहां हैं ?

ये पुरपेच गलियां, ये बेख्वाब[३] बाज़ार,
ये गुमनाम राही, ये सिक्कों की झनकार,
ये इस्मत[४] के सौदे, ये सौदों पे तकरार,
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहां हैं ?

तअफ्फुन[५] से पुर नीम-रौशन[६] ये गलियां,
ये मसली हुई अधखिली ज़र्द कलियां,
ये बिकती हुई खोखली रंग - रलियां,
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहां हैं ?

वो उजले दरीचों में पायल की छन-छन,
तनफ्फुस[७] की उलझन पे तबले की धन-धन,
ये बेरूह कमरों में खांसी की ठन ठन,
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहां हैं ?

ये गूंजे हुए कहकहे रास्तों पर,
ये चारों तरफ भीड़ सी खिड़कियों पर,
ये आवाजे खिंचते हुए आंचलों पर,
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहां हैं ?

---

१ आत्म सम्मान के २ पूर्व की पवित्रता के गुण गाने वाले ३ निद्रा रहित
४ सतीत्व ५ दुर्गंध ६ मद्धम प्रकाश वाली ७ श्वास

ये फूलो के गजरे, ये पीको के छींटे,
ये बेबाक नजरें, ये गुस्ताख फिकरे,
ये ढलके बदन और ये मदकूक चेहरे[1],
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

ये भूखी निगाहें हसीनो की जानिब,
ये बढते हुए हाथ सीनों की जानिब,
लपकते हुए पाव जीनों की जानिब,
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

यहा पीर[2] भी आ चुके हैं जवा भी,
तनोमंद[3] बेटे भी अब्बा मिया भी,
ये बीबी भी है और बहन भी है मा भी,
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

मदद चाहती है ये हव्वा की बेटी,
यशोदा की हम-जिन्स[4], राधा की बेटी,
पयम्बर की उम्मत[5], जुलैखा की बेटी,
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

बुलाओ, खुदायाने - दी को[6] बुलाओ,
ये कूचे, ये गलिया, ये मन्जर दिखाओ,
सना-ख्वाने तकदीसे-मशरिक को लाओ,
सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

---

१ क्षयग्रस्त २ बूढे ३ हृष्ट-पुष्ट ४ सहजातीय ५ अनुयायी समुदाय
६ मजहब या धर्म के ठेकेदारों को

तरहे-नौ*

मस्रई-ए-वका-ए-शौकते ग्रमकदरी[1] की खैर,
माहौले खिश्तवार मे[2] शीशागरी को[3] खैर।

वेजार है कनिश्तो-कलीसा से[4] इक जहा,
सौदागराने - दीन की[5] सौदागरी की खैर।

फाकाकशो के खून मे है जोशे-इन्तिकाम[6],
सर्माया[7] के फरेबे-जहा-परवरी[8] की खैर।

तबकाते-मुब्तजल मे[9] है तनज़ीम[10] की नमूद[11],
शाहनशहो के जाब्ता-ए-खुदसरी की[12] खैर।

एहसास बढ रहा है हुकूके-ह्यात[13] का,
पैदाइशी हुकूके - सितमपवरी की[14] खैर।

इब्लीस[15] खदाजन है[16] मजाहब को[17] लाश पर,
पैगम्बराने दहर की[18] पैगम्बरी की खैर।

सहने जहा मे[19] रक्सकुना[20] हैं तबाहिया,
आका ए हस्तो-बूद की[21] सनग्रनगरी की खैर।

---

* नई नींव

१ बादशाहत के बचाव का प्रयत्न २ पत्थर बरसाते हुए वातावरण मे ३ काच ढालने की ४ मस्जिद और मन्दिर स ५ धम के व्यापारियो की ६ बदला लेने का जोश ७ पूंजी के ८ ससार को पालने के फरेब ९ निचले वर्गों म १० सगठन ११ प्रादुर्भाव १२ विद्रोहियो को कुचलने के कानून १३ जीवन के अधिकारो १४ अत्याचार करने के ज म सिद्ध अधिकारो की (Divine Right of Kings) १५ शैतान १६ हँस रहा है १७ मजहबों की १८ दुनिया के पैगम्बरों की १९ ससार के आगन म २० नृत्यशील २१ अतीत और वतमान के मालिक (खुदा) की

शोले लपक रहे हैं जहन्नुम की गोद से,
वागे-जना मे[1] जल्वा-ए-हूरो-परी की[2] खैर ।

इन्सा उलट रहा है रुखे-ज़ीस्त से[3] नकाव,
मजहव के एहतमामे-फुसू - परवरी[4] की खैर ।

इलहाद[5] कर रहा है मुरत्तिव[6] जहाने-नौ[7],
दैरो-हरम के[8] हीला-ए-गारतगरी की[9] खैर ।



१ स्वग की वाटिका मे २ हूरो और परियो के जलवे की ३ जीवन के मुख पर से ४ जादू चलान के प्रबन्ध ५ नास्तिकता ६ सम्पादन ७ नव ससार ८ मदिर मस्जिद ९ ध्वस या फूट डालने के प्रयत्न की

ताजमहल

ताज तेरे लिए इक मज़हरे-उल्फ़त[1] ही सही,
तुझको इस वादिये-रंगीं[2] से अक़ीदत[3] ही सही,
मेरी महबूब[4]! कहीं और मिला कर मुझ से!

बज़्मे-शाही में[5] ग़रीबों का गुज़र, क्या मानी?
सब्त[6] जिस राह पे हों सतवते-शाही के[7] निशां,
उस पे उल्फ़त-भरी रूहों का[8] सफ़र क्या मानी?

मेरी महबूब, पसे - पर्दा - ए - तश्हीरे - वफ़ा[9],
तूने सतवत[10] के निशानों को तो देखा होता।
मुर्दा शाहों के मक़ाबिर से[11] बहलने वाली!
अपने तारीक[12] मकानों को तो देखा होता।

अनगिनत लोगों ने दुनिया में मोहब्बत की है,
कौन कहता है कि सादिक़[13] न थे जज़्बे उनके?
लेकिन उनके लिए तश्हीर[14] का सामान नहीं,
क्योंकि वो लोग भी अपनी ही तरह मुफ़लिस[15] थे।
ये इमारातो मक़ाबिर[16], ये फ़सीलें, ये हिसार[17],

---

१ प्रेम द्योतक २ रमणीय स्थान ३ श्रद्धा ४ प्रेयसी ५ शाही दरबार में ६ अंकित ७ शाही वैभव के ८ आत्माओं का (प्रेमियों का) ९ वफ़ा (प्रेम) के विज्ञापन के पर्दे के पीछे १० वैभव ११ मकबरों से १२ अंधकारपूर्ण १३ सच्चे १४ विज्ञापन १५ निर्धन १६ इमारतें और मक़बरे १७ किले

मुतलक-उल-हुक्म[1] शाहनशाहो की अज़मत[2] के सतू[3]
दामने - दहर पे[4] उस रग की गुलकारी है,
जिस म शामिल है तेरे और मेरे अजदाद[5] का खू।

मेरी महबूब ! उन्हे भी तो मोहब्बत होगी,
जिनकी सन्नाई ने[6] बख्शी है[7] इसे शक्ले-जमील[8]।
उनके प्यारो के मकाबिर रहे बे - नामो - नुमूद[9],
आज तक उन पे जलाई न किसी ने कदील[10]।
ये चमनजार[11], ये जमना का किनारा, ये महल,
ये मुनक्कश[12] दरो-दीवार, ये महराब, ये ताक।
इक शाहनशाह ने दौलत का सहारा लेकर,
हम गरीबो की मोहब्बत का उडाया है मजाक।

मेरी महबूब कही और मिला कर मुझसे !

हयात इक मुस्तकिल गम के सिवा कुछ भी नही शायद
खुशी भी याद आती है तो आसू बनके आती है

---

१ स्वेच्छाचारी २ महानता ३ स्तम्भ ४ ससार के दामन पर ५ पूर्वजो ६ कारीगरी ने ७ प्रदान की है ८ सुदर रूप ९ जिसका कोई नाम व निशान तक नही १० दीप ११ उद्यान १२ चित्रित

लम्हा-ए-ग़नीमत[१]

मुस्करा, ऐ ज़मीने - तीरा - ओ - तार[२]
सर उठा, ऐ दबी हुई मख़लूक़[३]

देख वो मग़रिबी उफ़क़ के[४] क़रीब
आँधियाँ पेचोताब खाने लगीं
और पुराने क़मार - ख़ाने में[५]
कुहना[६] शातिर[७] बहम[८] उलझने लगे
कोई तेरी तरफ़ नहीं निगराँ[९]
ये गिराँबार[१०], सर्द ज़ंजीरें
ज़ंग-ख़ुर्दा[११] हैं, आहनी[१२] ही सही
आज मौक़ा है, टूट सकती हैं
फ़ुर्सते - यक - नफ़स[१३] ग़नीमत जान
सर उठा ऐ दबी हुई मख़लूक़



१ दुर्लभ क्षण २ अंधकारमय धरती ३ मानव जाति ४ क्षितिज के ५ जूएख़ाने में ६ पुराने ७ जुआरी ८ आपस में ९ देख रहा १० बोझल ११ जंग खाई हुई १२ लोहे की १३ एक सांस (क्षण) की फ़ुर्सत

तुलूग्र ए-इश्तराकियत[1]

जश्न बपा[2] है कुटियाओ मे ऊँचे ऐवाँ[3] काप रहे हैं,
मजदूरो के बिगडे तेवर देख के सुल्ता काप रहे हैं।

जागे है इपलास के[4] मारे, उट्ठे है बेबस दुखियारे,
सीनो मे तूफा का तलातुम[5], आखो मे बिजली के शरारे।

चौक चौक पर, गली-गली म, सुर्ख फरेरे[6] लहराते हैं,
मजलूमो के बागी लश्कर सैल-सिफत[7] उमडे आते है।

शाही दरबारो के दर से फौजी पहरे खत्म हुए है,
जाती[8] जागीरो के हक और मोहमल[9] दावे खत्म हुए हैं।

शोर मचा है बाजारो मे, टूट गये दर जिन्दानो के[10],
वापस माग रही है दुनिया गसब-शुदा हक[11] इन्सानो के।

रुसवा बाजारी खातूनें[12] हक-ए नसाई[13] माग रही है,
सदियो की खामोश जबानें सहर-नवाई[14] माग रही हैं।

रौंदी-कुचली आवाजो के शोर से धरती गूज उठी है।
दुनिया के अन्याय नगर म हक की पहली गूज उठी है।

जमग्र हुए है चौराहो पर आकर भूखे और गदागर[15],
एक लपकती आधी बनकर, एक भभकता शोला होकर।

---

१ साम्यवाद का उदय २ उ सव हो रहा है ३ महल ४ निधनता के ५ जोर ६ भडे ७ तूफान का रूप धारण किये हुए ८ व्यक्तिगत ९ निरथक १० कारागारो के द्वार ११ हडपे हुए अधिकार १२ अपमानित बाज़ारी औरतें १३ स्त्रीत्व का अधिकार १४ आवाज से जादू जगाने का अधिकार १५ भिखारी

काधा पर सगीन कुदालें, होटो पर बे
दहकानो के दल निक्ले हैं अपनी बिगडी

आज पुरानी तदबीरो से[१] आग के शोअले
उभरे जज्बे दब न सकेंगे, उखडे परचम[२] ज

राजमहल के दरबानो से ये सरकश तूफा
चन्द किराए के तिनको से मैले बेपाया[३]

काप रहे हैं जालिम सुल्ता, टूट गये दिल
भाग रहे हैं जिल्ले - इलाही[४] मुँह उतरे है

एक नया सूरज चमका है, एक अनोखी
खत्म हुई अफराद की शाही[७], अब जमहूर[८] की



अजनबी मुहाफ़िज़[१]

अजनबी देस के मजबूत गराडील[२] जवा
ऊचे होटल के दरे-खास पे[3] इस्तादा है[४]
और नीचे मेरे मजबूर वतन की गलिया
जिनमे आवारा फिरा करते हैं भूखो के हुजूम
जर्द चेहरो पे नकाहत की[५] नमूद[६]
खून मे सैकडो सालो की गुलामी का जमूद[७]
इल्म के नूर से आरी[८] — महरूम
फलक-ए हिन्द के[९] अफसुर्दा नजूम[१०]
जिनकी तखईल के[११] पर
छू नही सकते हैं उस ऊचो पहाडो का सिरा
जिस पे होटल के दरीचो म खडे है तनकर
अजनबी देश के मजबूत गराडील जवा
मुह मे सिग्रेट लिये हाथो म ब्राडी के गिलास
जेब मे नुकरई[१२] सिक्को की खनक
भूके दहकानो के[१३] माथो का अरक[१४]
रात को जिसके एवज[१५] विकता है
किसी इफ्लास की मारी का[१६] तकद्दुस[१७]—यानी
किसी दोशीजा-ए-मजबूर की[१८] इस्मत का गुरूर

---

१ अपरिचित रक्षक (अमरीकी सिपाही जो दूसरे महायुद्ध मे अग्रेजी राज्य की ओर से भारत को जापानी आक्रमण से सुरक्षित रखने के लिए बुलाए गये थे) २ भारी भरकम, लम्बे चौडे ३ खास दरवाजे पर ४ खडे हैं ५ कमज़ोरी की ६ झलक ७ जमाव ८ वचित ९ भारतीय गगन के १० उदास तारे ११ कल्पना के १२ रजत १३ किसानों के १४ पसीना १५ बदले मे १६ निधनता की मारी का १७ पवित्रता १८ विवश कुमारी की

महफिले-ऐश के गूजे हुए ऐवानो मे[1]
ऊचे होटल के शबिस्तानो म[2]
कहकहे मारते हँसते हुए इस्तादा है
अजनबी देस के मजबूत गराडील जवा

इसी होटल के करीब
भूके मजबूर गुलामो के गिरोह
टिकटिकी बाध के तकते हुए ऊपर की तरफ
मुन्तजिर बैठे है उस साअते-नायाब के[3] — जब
बूट की नोक से नीचे फेंके
अजनबी देस के बेफिक्र जवानो का गिरोह
कोई सिक्का, कोई सिग्रेट, कोई केक
या डबलरोटी के झूठे टुकडे
छीना-झपटी के मनाज़िर का[4] मजा लेने को
पालतू कुत्तो के एहसास पे हँस देने को
भूके मजबूर गुलामो का गिरोह
टिकटिकी बाध के तकता हुआ इस्तादा है

काश ! ये बेहिसो-बेवकअतो-बेदिल[5] इसा
रोम के जुल्म की जिन्दा तसवीर
अपना माहौल बदल देने के काबिल होते

---

१ महलो म (सुसज्जित कमरो म) २ शयनागारों म ३ दुलभ क्षण के
४ दृश्यो का ५ जड, महत्वहीन और निराश

बुलावा

देखो दूर उफ़क की[1] ओर से[2] झाँक रहा है सुर्ख सवेरा
जागो ऐ मजदूर किसानो।
उट्ठो ऐ मज़लूम इन्सानो।

धरती के अन्नदाता तुम हो   जग के प्राण विधाता तुम हो
धनियों की खुशहाली तुम से   खेतों में हरियाली तुम से
ऊँचे महल बनाये तुमने   शाही तख्त सजाये तुमने
हीरे, लाल निकाले तुमने   नेज़े भाले ढाले तुमने
हर बगिया के माली तुम हो   इस संसार के वाली[3] तुम हो
वक्त है धरती को अपना लो   आगे बढ़ो हथियार संभालो
उट्ठो ऐ मज़लूम इन्सानो।
जागो ऐ मजदूर किसानो।

देखो धरती काँप रही है   गर्द, फरेरे[4] ढाँप रही है
कष्ट की ज्वाला फूट पड़ी है   वक्त है थोड़ा जंग छिड़ी है
फैल रहे हैं काल के घेरे   थामो अपने सुर्ख फरेरे
तुम हो जग-जनता के सैनिक   पाप के नाशक, सत्य के रक्षक
भूख के मारे, जुल्म के पाले   काली कुटियाओं के उजाले
क्या रोकेगी तुमको शाही   तुम हो बहादुर सुर्ख सिपाही
जागो ऐ मजदूर किसानो।
उट्ठो ऐ मज़लूम इन्सानो।

देखो दूर उफ़क की ओर से, झाँक रहा है सुर्ख सवेरा

१ क्षितिज की २ [illegible] ३ मालिक ४ [illegible]

शहजादे

जहन[1] मे अजमते - अजदाद के[2] किस्से लेकर
अपने तारीक[3] घरौदो के खला म[4] खो जाओ
मरमरी[5] ख्वाबो की परियो से लिपटकर सो जाओ
अब्रपारो पे[6] चलो, चाद सितारो मे उडो
यही अजदाद मे विरसे मे मिला है तुमको
दूर मगरिब की फजाओ मे[7] दहकती हुई आग
अह्ले - सर्माया की[8] आवेजिशे - बाहम[9] न सही
जगे - सर्माया - ओ - मेहनत ही सही
दूर मगरिब म है—मशरिक की फजा म तो नही
तुमको मगरिब के बखेडो से भला क्या लेना ?
तीरगी[10] खत्म हुई, सुख शुआएँ[11] फैली
दूर मगरिब की फजाओ मे तराने गूजे
फतहे - जमहूर के[12], इन्साफ के, आजादी के
साहिले - शक पे[13] गैसो का धुआ छाने लगा
आग बरसाने लगे अजनबी तोपो के दहन[14]
ख्वाबगाहो की[15] छतें गिरने लगी
अपने बिस्तर से उठो !
नये आकाओ की ताअज़ीम[16] करो
और—फिर अपने घरौदो के खला मे खो जाओ
तुम बहुत देर—बहुत देर तलक सोए रहे

---

१ मस्तिष्क २ पूर्वजो की महानता के ३ अधेरे ४ शून्य मे
५ रजत ६ बादल के टुकडो पर ७ वातावरण म ८ पूजीपतियो की
९ परस्पर खीचातानी १० अधकार ११ किरनें १२ जनता की विजय के
१३ पूरब के तट पर १४ मुँह १५ शयनागारो की १६ आदर स्वागत्

शुआ-ए फर्दा[1]

तीरा-ओ-तार[2] फजाओ मे[3] सितम खुर्दा बशर[4]
और कुछ देर उजाले के लिए तरसेगा
और कुछ देर उठेगा दिले-गेती से[5] धुआ
और कुछ देर फजाओ से लहू बरसेगा

और फिर, अहमरी-होटो के[6] तबस्सुम[7] की तरह
रात के चाक से फूटेगी शुआओ की[8] लकीर
और जमहूर के[9] बेदार तआवुन[10] के तुफल[11]
खत्म हो जायेगी इसा के लहू की तकतीर[12]

और कुछ देर भटक ले मेरे दरमादा नदीम[13]
और कुछ दिन अभी जहराब के[14] सागर पीले
नूर-अफशा[15] चली आती है उरूसे-फर्दा[16]
हाल, तारीको-सम-अफशा[17] सही, लेकिन जीले

---

१ भविष्य का प्रकाश २ तग और अधेरी ३ वातावरण म ४ पीडित मानव ५ धरती क हृदय से ६ लाल होठो के ७ मुस्कराहट ८ किरनो की ९ जनता के १० चेतन सहयोग ११ फल-स्वरूप १२ कतरा कतरा टपकना (अर्क खचने की क्रिया) १३ थके हारे साथी १४ विष के १५ उजाला छिडकती १६ भविष्य रूपी दुल्हन १७ अधकारमय तथा विष बिखेरता हुआ

बंगाल

जहाने कुहना के[1] भफ्लूज[2] फरमफादानो[3] !
निजामे-नौ के[4] तकाजे सवाल करते हैं—

ये शाहराहे[5] इसी वास्ते बनी थी क्या
कि इन पे देश की जनता सिसक-सिसक के मरे ?
जमी ने क्या इसी कारण अनाज उगला था
कि नस्ले-आदमो-हव्वा[6] बिलक-बिलक के मरे ?

मिलें इसीलिए रेशम के ढेर बुनती है
कि दुख्तराने-वतन[7] तार तार को तरसें ?
चमन को इसलिए माली ने खू से सींचा था
कि उसकी अपनी निगाहे बहार को तरसें ?

जमी की कुव्वते-तख्लीक के[8] खुदावन्दो[9] !
मिलो के मुन्तजिमो[10] सल्तनत के फर्जन्दो[11] !

पचास लाख फसुर्दा[12] गले-सडे ढाचे
निजामे-ज़र के[13] खिलाफ एहतजाज[14] करते है
खमोश होटो से, दम तोडती निगाहो से
बशर[15], बशर के खिलाफ एहतजाज करते हैं

(बंगाल के अकाल के समय)

---

१ पुरानी दुनिया के २ पशु ३ दार्शनिको ४ नव व्यवस्था के ५ राजपथ ६ मानव जाति ७ देश की बेटियां ८ उपज शक्ति ९ मालिको १० प्रबन्धको ११ बेटो १२ निर्जीव १३ पूंजीवाद के १४ विरोध प्रकाशन १५ मनुष्य

फनकार[1]

मैंने जो गीत तेरे प्यार की खातिर लिखे,
आज उन गीतों को बाजार में ले आया हूँ।

आज दूकान पे नीलाम उठेगा इनका,
तूने जिन गीतों पे रक्खी थी मोहब्बत की असास[2]।
आज चाँदी के तराजू में तुलेगी हर चीज़,
मेरे अफ़कार[3], मेरी शायरी, मेरा एहसास।

जो तेरी ज़ात से मनसूब थे[4], उन गीतों को,
मुफलिसी जिन्स[5] बनाने पे उतर आई है।
भूख, तेरे रुखे-रंगीं के[6] फसानों के एवज,
चंद अशिया ए-जरूरत की[7] तमन्नाई है।

देख इस अर्सा - गहे - मेहनतो - सर्माया[8] में,
मेरे नग्मे भी मेरे पास नहीं रह सकते।
तेरे जल्वे किसी ज़रदार[9] की मीरास सही,
तेरे खाके[10] भी मेरे पास नहीं रह सकते।

आज इन गीतों को बाजार में ले आया हूँ।
मैंने जो गीत तेरे प्यार की खातिर लिखे॥

---

१ कलाकार २ नींव ३ रचनाएं ४ सम्बंधित थे ५ खाद्य-पदार्थ ६ रंगीन चेहरे के ७ ज़रूरत की चीज़ों की ८ मेहनत और पूंजी के क्षेत्र में ९ पूँजीपति १० रेखा चित्र, शब्द चित्र

कभी-कभी

कभी-कभी मेरे दिल मे ख्याल आता है !

कि जिन्दगी तेरी जुल्फो की नम छाओ म,
गुजरने पाती तो शादाब हो भी मकती थी।
ये तीरगी[१] जो मेरी जीस्त का मुकद्दर[२] है,
तेरी नजर की शुआओ मे[3] खो भी मकती थी।

अजब न था कि मैं बेगाना ए-अलम[४] रहकर,
तेरे जमाल की[५] रअनाइयो म[६] खो रहता।
तेरा गुदाज बदन[७], तेरी नीम-बाज[८] आँखें,
इन्ही हसीन फसानो मे महव[९] हो रहता।

पुकारती मुझे जब तल्खिया[१०] जमाने की,
तेरे लबो से[११] हलावत के[१२] घूट पी लेता।
हयात[13] चीखती फिरती बरहना-सर[१४] गौर मै,
घनेरी जुल्फो के साये मे छुपके जी लेता।

मगर ये हो न सका और अब ये आलम[१५] है,
कि तू नही, तेरा गम, तेरी जुस्तजू भी नही।
गुजर रही है कुछ इस तरह जिन्दगी जैसे,
इसे किसी के सहारे की आरजू भी नहीं।

---

१ अंधेरा २ जीवन का भाग्य ३ रश्मियो मे ४ दुखो से अपरिचित ५ सौंदय को ६ लावण्यताओ मे ७ मदुल, मासल ८ अधखुली ९ निमग्न १० कटुताएँ ११ होटो से १२ माधुय, के, रस के १३ जीवन १४ नगे सिर १५ स्थिति

जमाने भर के दुखो को लगा चुका हू गले,
गुजर रहा हू कुछ अनजानी रहगुजारो से।
मुहीब[१] साए मेरी सिम्त बढते आते हैं,
हयातो-मौत[२] के पुरहौल खारजारो से[३]।

न कोई जादह[४] न मजिल न रौशनी का सुराग,
भटक रही है खलाओ मे[५] जिन्दगी मेरी
इन्ही खलाओ मे रह जाऊगा कभी खो कर,
मै जानता हू मेरी हम-नफस[६], मगर यूही,

कभी-कभी मेरे दिल मे खयाल आता है।

अपनी तबाहियो का मुझे कोई गम नही
तुमने किसी के साथ मोहब्बत निभा तो दी

---

१ भयानक २ जीवन तथा मृत्यु ३ भयावह कटीले जगलों से ४ मार्ग
५ शून्य मे ६ सहचर

फरार[१]

अपने माज़ी के[२] तसव्वुर[३] से हिरासा[४] हू मै,
अपने गुजरे हुए ऐयाम से[५] नफरत है मुझे।
अपनी बेकार तमन्नाओ पे शरमिन्दा हू,
अपनी बेसूद[६] उमीदो पे नदामत है मुझे।

मेरे माज़ी को अधेरे मे दबा रहने दो,
मेरा माजी मेरी जिल्लत के सिवा कुछ भी नही।
मेरी उम्मीदो का हासिल, मेरी काविश का[७] सिला[८],
एक बेनाम अज़ीयत के[९] सिवा कुछ भी नही।

कितनी बेकार उमीदो का सहारा लेकर,
मैंने ऐवान[१०] सजाये थे किसी की खातिर।
कितनी बेरब्त[११] तमन्नाओ के मुबहम खाके[१२],
अपने ख्वाबो मे बसाये थे किसी की खातिर।

मुझसे अब मेरी मोहब्बत के फसाने[१३] न कहो,
मुझको कहने दो कि मैने उन्हे चाहा ही नही।
और वो मस्त निगाहे जो मुझे भूल गई,
मैंने उन मस्त निगाहो को सराहा ही नही।

---

१ पलायन, नराश्य २ अतीत के ३ कल्पना ४ भयभीत ५ दिनो से ६ व्यर्थ ७ प्रयत्न का ८ बदला ९ कष्ट के १० महल ११ अनमेल १२ अस्पष्ट चित्र १३ कहानिया

मुझको कहने दो कि मै आज भी जी सकता हू,
इश्क नाकाम सही, जिन्दगी नाकाम नही।
उन्हे अपनाने की ख्वाहिश, उन्हे पाने की तलब,
शौके-बेकार[१] सही, सइए-ए-गम-अजाम[२] नही।

वही गेसू[३], वही नजरे, वही आरिज[४], वही जिस्म,
मैं जो चाहू तो मुझे और भी मिल सकते है।
वो कवल जिनको कभी उनके लिए खिलना था,
उनकी नजरो से बहुत दूर भी खिल सकते हैं।



१ बेकार शौक २ दुखात पैदा ३ केश ४ गाल

कल और आज

[१]

कल भी बूंदे बरसी थी,
कल भी बादल छाये थे,
और कवि ने सोचा था !

बादल, ये आकाश के सपने उन जुल्फो के साये हैं,
दोशे-हवा[1] पर मैखाने ही मैखाने घिर आये है।
रुत बदलेगी फूल खिलेंगे झोके मध बरसायेंगे,
उजले-उजले खेतो म रगी आचल लहरायेंगे।
चरवाहे बसी की धुन से गीत फजा मे बोयेंगे,
आमो के झुडो के नीचे परदेसी दिल खोयेंगे।
पीग बढाती गोरी के माथे से कौदे लपकेंगे,
जोहड के ठहरे पानी मे तारे आखे झपकेगे।
उलझी-उलझी राहो मे वो आचल थामे आयेंगे,
धरती, फूल, आकाश, सितारे सपना-सा बन जायेंगे।

कल भी बूदे बरसी थी,
कल भी बादल छाये थे,
और कवि ने सोचा था !

---

१ वायु के कधे पर

[२]

आज भी बूंदें बरसेंगी,
आज भी बादल छाये हैं,
और कवि इस सोच म है !

बस्ती पर बादल छाये है, पर ये बस्ती किसकी है ?
धरती पर अमृत बरसेगा, लेकिन धरतो किसकी है ?
हल जोतेगी खेतो मे अल्हड टोली दहकानो की[१],
धरती से फूटेगी मेहनत फाकाकश इन्सानो की।
फसलें काट के मेहनतकश, गल्ले के ढेर लगायेंगे,
जागीरो के मालिक आकर सब 'पूजी' ले जायेंगे।
बूढे दहकानो के घर बनिये की कुर्की आयेगी,
और कर्जे के सूद मे कोई गोरी बेची जायेगी।
आज भी जनता भूखी है और कल भी जनता तरसी थी,
आज भी रिमझिम बरखा होगी, कल भी बारिश बरसी थी।

आज भी बादल छाये हैं,
आज भी बूंदें बरसेंगी,
और कवि इस सोच मे है !

---

१ किसानो की

हिरास[१]

तेरे होंटो पे तबस्सुम[२] की वो हल्की-सी लकीर,
मेरे तख़ईल में[३] रह-रह के झलक उठती है।
य अचानक तेरे आरिज़ का[४] खयाल आता है
जैसे जुलमत में[५] कोई शम्मअ भडक उठती है।

तेरे पैराहने-रगी की[६] जुनूंखेज़[७] महक,
ख्वाब बन-बन के मेरे जहन में[८] लहराती है।
रात की सर्द खमोशी मे हर इक झोके से,
तेरे अनफास[९], तेरे जिस्म की आच आती है।

मैं सुलगते हुए राज़ो को[१०] अया[११] तो करदू,
लेकिन इन राज़ो की तशहीर से[१२] जी डरता है।
रात के ख्वाब उजाले म बया तो कर दू,
इन हसी ख्वाबो की ताबीर से[१३] जी डरता है।

तेरे सासो की थकन तेरी निगाहो का सुकूत[१४],
दर हकीकत[१५] कोई रगीन शरारत ही न हो।
मै जिसे प्यार का अदाज़ समझ बैठा हू,
वो तबस्सुम[१६] वो तकल्लुम[१७] तेरी आदत ही न हो।

---

१ भय २ मुस्कराहट ३ कल्पना म ४ कपोलों का ५ अधेरे म ६ रगीन लिबास की ७ उन्माद-पूर्ण ८ मस्तिष्क म ९ श्वास १० भेदो को ११ प्रकट १२ विज्ञापन से १३ स्वप्न-फल स १४ चुप्पी १५ वास्तव म १६ मुस्कराहट १७ बात चीत (का ढग)

सोचता हू कि तुझे मिलके मै जिस सोच मे हू,
पहले उस सोच का मकसूम[1] समझ लूँ तो कहू ।
मै तेरे शहर मे अनजान हूँ परदेसी हूँ,
तेरे अल्ताफ[2] का मफहूम[3] समझ लू तो कहू ।

कही ऐसा न हो पाओ मेरे थर्रा जायें,
और तेरी मरमरी[4] बाँहो का सहारा न मिले ।
अश्क बहते रहे खामोश सियह[5] राता म,
और तेरे रेशमी आचल का किनारा न मिले ।



१ भाग्य (परिणाम) २ कृपाओ का ३ तात्पय ४ सगमरमर की बनी (धवल, गोरी) ५ सियाह (काली)

इसी दोराहे पर !

अब न इन ऊँचे मकानो मे कदम रक्खूगा,
मैने इक बार ये पहले भी कसम खाई थी।
अपनी नादार मोहब्बत की शिकस्तो के तुफैल,
जिन्दगी पहले भी शर्माई थी झुझलाई थी।

और ये अहद[1] किया था कि ब-ईं-हाले-तबाह[2],
अब कभी प्यार भरे गीत नही गाऊँगा।
किसी चिलमन ने पुकारा भी तो बढ जाऊँगा,
कोई दरवाजा खुला भी तो पलट आऊँगा।

फिर तेरे कापते होटो की फुसूँकार[3] हँसी,
जाल बुनने लगी, बुनती रही, बुनती ही रही।
मै खिचा तुझसे, मगर तू मेरी राहो के लिए,
फूल चुनती रही, चुनती रही, चुनती ही रही।

बर्फ बरसाई मेरे जहनो-तसव्वुर ने[4] मगर,
दिल मे इक शोला-ए-बेनाम-सा[5] लहरा ही गया
तेरी चुपचाप निगाहो को सुलगते पाकर,
मेरी बेजार तबीयत को भी प्यार आ ही गया।

---

१ प्रतिज्ञा २ यो तबाह हाल होने पर ३ जादू भरी ४ मस्तिष्क तथा कल्पना ने ५ बेनाम सा शोला

अपनी बदली हुई नज़रों के तकाज़े न छुपा,
मैं इस अंदाज़ का मफ़हूम[1] समझ सकता हूँ।
तेरे ज़रकार[2] दरीचों की बुलंदी की कसम,
अपने अक़दाम का मक़सूम[3] समझ सकता हूँ।

'अब न इन ऊँचे मकानों में कदम रक्खूँगा',
मैंने इक बार ये पहले भी कसम खाई थी।
इसी सर्माया ओ-इफ्लास के दोराहे पर,
ज़िन्दगी पहले भी शर्माई थी झुँझलाई थी।



१ अर्थ २ स्वर्णिम ३ उठे हुए कदमों का परिणाम

एक तस्वीरे-रग

मैने जिस वक्त तुझे पहले-पहल देखा था,
तू जवानी का कोई ख्वाब नजर आई थी।
हुस्न का नग्मा-ए-जावेद[1] हुई थी मालूम,
इश्क का जज्बा-ए-बेताब[2] नजर आई थी।

ऐ तरबजारे-जवानी[3] की परीशा तितली,
तू भी इक बू-ए गिरफ्तार[4] है, मालूम न था।
तेरे जलवो म बहारें नजर आती थी मुझे,
तू सितम-खुदाए-अदबार[5] है, मालूम न था।

तेरे नाजुक-से परो पर ये जरो-सीम का[6] बोझ,
तेरी परवाज[7] को आजाद न होने देगा।
तूने राहत की तमन्ना म जो गम पाला है,
वो तेरी रूह को आबाद न होने देगा।

तूने सर्माये की छाओ मे पनपने के लिए,
अपने दिल, अपनी मोहब्बत का लहू बेचा है।
दिल की तजईने फुसुर्दा[8] का असासा[9] लेकर,
शोख रातो की मसर्रत का[10] लहू बेचा है।

---

१ अमर सगीत २ विफल भावना ३ यौवन रूपी उद्यान ४ बन्दी सुगन्ध ५ दुर्भाग्य के हाथों पीडित ६ सोने चाँदी का [illegible] उड़ान ८ फीकी सज्जा ९ निधि १० आनन्द का

ज़ख्म-ख़ुर्दा[1] हैं तख़य्युल की[2] उड़ानें तेरी,
तेरे गीतों में तेरी रूह के ग़म पलते हैं।
सुरमगीं[3] आँखों में यूँ हसरतें लौ देती हैं,
जैसे वीरान मज़ारों पे दिये जलते हैं।

इससे क्या फ़ायदा रंगीन लबादों के[4] तले,
रूह जलती रहे, घुलती रहे, पज़मुर्दा[5] रहे।
होंट हँसते हों दिखावे के तबस्सुम[6] के लिए,
दिल ग़मे-ज़ीस्त[7] में बोझल रहे आज़ुर्दा[8] रहे।

दिल की तस्कीं[9] भी है आसाइशे-हस्ती[10] की दलील,
ज़िंदगी सिर्फ़ ज़रो-सीम का पैमाना नहीं।
ज़ीस्त एहसास[11] भी है, शौक भी है, दर्द भी है,
सिर्फ़ अनफ़ास[12] की तरतीब का अफ़साना[13] नहीं।

उम्र भर रेंगते रहने से कहीं बेहतर है,
एक लम्हा जो तेरी रूह में वुसअत[14] भर दे।
एक लम्हा जो तेरे गीत को शोख़ी दे दे,
एक लम्हा जो तेरी लै में मसरत भर दे॥

---

१ घायल २ कल्पना की ३ सुर्मा भरी ४ वस्त्रों के ५ मुर्झाई हुई ६ मुस्कराहट ७ जीवन के ग़म ८ दुखी ९ तृप्ति, सन्तोष १० जीवन के सुख ११ अनुभूति १२ श्वासों की १३ कहानी १४ विशालता

एहसासे कामराँ[1]

उफक़े रूस से[2] फूटी है नई सुबह की जौ[3],
ज़ुलमते शब का[4] जिगर चाक हुआ जाता है।
तीरगी[5] जितना सभलने के लिए रुकती है,
सुर्ख़ सैल[6] और भी बेबाक[7] हुआ जाता है।

सामराज अपने वसीलो पे भरोसा न करे,
कुहना[8] जंजीरो की झंकारे नही रह सकती।
जज्बा-ए-नुसरते-जमहूर की[9] बढती रौ मे,
मुल्क और कौम की दीवारें नही रह सकती।

सगो-आहन की[10] चटानें हैं अवामी[11] जज़्बे,
मौत के रेंगते सायो से कहो, हट जायें।
करवटें लेके मचलने को है सैले-अनवार[12],
तीरा ओ तार[13] घटाओ से कहो, छट जायें।

सालहा-साल के बेचैन शरारो का ख़रोश[14],
इक नई जीस्त का[15] दर बाज[16] किया चाहता है।
अज़्मे-आजादी-ए-इंसा[17] ब - हज़ारा जबरूत[18],
इक नये दौर का आगाज[19] किया चाहता है।

---

१ इष्टसिद्धि का अनुभव २ रूस के क्षितिज से ३ किरन ४ रात की सियाही का ५ सियाही ६ बाढ ७ प्रचड ८ पुरानी ९ जनता की विजय पाने की इच्छा की १० पत्थर और लोहे की ११ जनता के १२ प्रकाश का तूफान १३ अधेरी १४ जोश १५ ज़िन्दगी का १६ दरवाजा खोलना १७ मानव स्वतन्त्रता प्राप्त करने का सकल्प १८ अत्यन्त महानता सहित १९ प्रारभ

बरतर अक्वाम के[1] मगरूर खुदाओ से कहो
आखरी बार ज़रा अपना तराना दोहराएं।
और फिर अपनी सियासत पे पशेमां होकर,
अपने नाकाम इरादों का कफ़न ले आयें।

सुर्ख तूफान की मौजों को जकड़ने के लिए,
कोई ज़ंजीरे-गिरां[2] काम नहीं आ सकती।
रक्स[3] करती हुई किरनों के तलातुम की[4] कसम,
अर्सा-ए-दह्र पे[5] अब शाम नहीं छा सकती।

(रूसी सेनाओं के जर्मन सीमा पार करने पर लिखी गई)



---

१ उच्च जातियों के २ बोझल ज़ंजीर ३ नृत्य ४ तूफ़ान की
५ जीवन क्षेत्र पर

मेरे गीत तुम्हारे हैं

अब तक मेरे गीतो मे उम्मीद भी थी पसपाई भी,
मौत के कदमो की आहट भी जीवन की अगड़ाई भी।
मुस्तकबिल की किरने भी थी, हाल की बोझल जुलमत[1] भी,
तूफानो का शोर भी था और ख्वाबो की शहनाई भी।

आज से मै अपने गीतो मे आतिशपारे[2] भर दूंगा,
मद्धम लचकीली तानो मे जीवट-धारे भर दूंगा।
जीवन के अन्धियारे पथ पर मशअल लेकर निकलूगा,
धरती के फैले आचल म सुख सितारे भर दूगा।

आज से ऐ मजदूर किसानो! मेरे राग तुम्हारे है,
फाकाकश इन्सानो! मेरे जोग बिहाग तुम्हारे हैं।
जब तक तुम भूखे नगे हो, ये शोले खामोश न होगे,
जब तक बे-आराम हो तुम, ये नग्मे राहत-कोश[3] न होगे।

मुझको इस का रज नही है लोग मुझे फनकार[4] न मानें,
फिक्रो-सुखन के[5] ताजिर मेरे शेरो को अशआर न मानें।
मेरा फन[6], मेरी उम्मीदें, आज से तुम को अपन हैं,
आज से मेरे गीत तुम्हारे दुख और सुख का दपन है।

तुमसे कुव्वत[7] लेकर अब मैं तुमको राह दिखाऊँगा,
तुम परचम[8] लहराना साथी मैं बरबत पर गाऊँगा।
आज से मेरे फन का मकसद[9] जजीरें पिघलाना है,
आज से मै शबनम के बदले अगारे बरसाऊँगा।

---

१ अधेरा २ आग के टुकडे ३ आनन्द-दायक ४ कलाकार
५ चिंतन और काव्य के ६ कला ७ शक्ति ८ झडा ९ उद्देश्य

मै नहा ता क्या ?

मेरे लिए ये तकल्लुफ, ये दुख, ये हसरत क्यो
मेरी निगाहे - तलब[1] आखरी निगाह न थी
हयातज़ारे - जहा की[2] तवील[3] राहो मे
हजार दीदाए - हैरा[4] फुसू[5] बखेरेंगे
हजार चश्मे - तमन्ना[6] बनेगी दस्ते - सवाल[7]
निकल के खलवते - गम से[8] नजर उठाओ तो
वही शफक[9] है, वही जो[10] है, मै नही तो क्या ?

मेरे वगैर भी तुम कामियाबे - इश्रत[11] थी
मेरे वगैर भी आबाद थे निशात - कदे[12]
मेरे वगैर भी तुमने दिये जलाये हैं
मेरे बगैर भी देखा है ज़ुलमतो का[13] नज़ूल[14]
मेरे न होने से उम्मीद का ज़िया[15] क्यो हो
बढी चलो मै ए इश्रत के[16] जाम छलकाती
तुम्हारी सेज, तुम्हारे वदन के फूलो पर
उसी बहार का परतो[17] है, मै नही तो क्या ?

---

१ इच्छुक नेत्र २ जीवन से परिपूर्ण ससार ३ दीघ ४ आश्चय भरे नन ५ जादू ६ इच्छुक नेत्र ७ सवाली का हाथ ८ उदास एकात से ९ ऊषा १० चमक ११ सुख वैभव म सफल १२ मनोरजन स्थल १३ अधेरो का १४ उतरना (उमडना) १५ हानि १६ सुख वभव की मदिरा के १७ प्रतिबिम्ब

मेरे लिए ये उदासी, ये सोग क्यो आखिर ?
मलोह चेहरे[१] पे गर्दे - फ़ुसुर्दगी[२] कैसी ?
बहारे - गाजा[३] से आरिज को ताज़गी बख्शो,
अलील[४] आखो मे काजल लगाओ, रग भरो
सियाह जूडे मे कलियो की कहकशा[६] गूधो
हज़ार हापते सीने, हजार कापते लब
तुम्हारी चश्मे - तवज्जोह के[७] मुन्तजिर हैं अभी
जिलो मे[८] नग्मा - ओ - रगो - बहारो - नूर लिए
हयात गर्मे - तगो - दौ[९] है, मै नही तो क्या ?



१ सलोने २ उदासी की धूल ३ पाउडर ४ कपोलों को ५ बीमार
६ आकाश-गगा ७ कृपा दृष्टि के ८ सग मे ९ भाग दौड म व्यस्त

खुदकुशी से पहले

उफ ये बेदर्द सियाही ,ये हवा के नौहे[1],
किसको मालूम है इस शब[2] की सहर[3] हो कि न हो ।
इक नजर तेरे दरीचे की तरफ देख तो लू,
डूबती आखो मे फिर तावे-नजर[4] हो कि न हो ॥

अभी रोशन है तेरे गम शबिस्ता के[5] दिये,
नीलगू[6] पर्दो से छनती है शुआयें[7] अब तक ।
अजनबी बाहो के हल्के मे[8] लचकती होगी,
तेरे महके हुए बालो की रिदायें[9] अब तक ॥

सद होती हुई बत्ती के धूए के हमराह,
हाथ फैलाए बढे आते हैं बोझल साये ।
कौन पोंछे मेरी आखो के सुलगते आसू,
कौन उलझे हुए बालो की गिरह सुलझाये ॥

आह ये गारे-हलाकत[10], ये दिये का महबस[11],
उम्र अपनी इन्ही तारीक[12] मकानो मे कटी ।
जिन्दगी फितरते-बेहिस की[13] पुरानी तक्सीर[14],
इक हकीकत थी मगर चद फसानो मे कटी ॥

कितनी आसाइशें[15] हसती रही ऐवानो मे[16],
कितने दर मेरी जवानी पे सदा बद रहे ।
कितने हाथो ने बुना अतलसो-कमरवाब मगर,
मेरे मलबूस की[17] तकदीर मे पेवद रहे ॥

---

१ विलाप २ रात ३ सुबह ४ देखने की शक्ति ५ शयनागार के ६ नीलिमा मय ७ किरनें ८ घेरे म ९ लटें १० विनाश की कन्दरा ११ कारागृह १२ अधेरे १३ निष्ठुर प्रकृति की १४ अपराध १५ सुख वैभव १६ महलो में १७ लिबास की

जुल्म सहते हुए इन्सानो के इस मकतल मे[1],
कोई फर्दा के[2] तसव्वुर से[3] कहा तक बहले ?
उम्र भर रेंगते रहने की सजा है जीना,
एक दो दिन की अज़ीयत[4] हो तो कोई सह ले ॥

कही जुलमत[5] है फजाओ पे[6] अभी तक तारी[7] ,
जाने कब खत्म हो इन्सा के लहू की तकतीर[8],
जाने कब निखरे सियहपोश[9] फजा का जोबन ?
जाने कब जागे सितम-खुर्दा बशर की[10] तकदीर ॥

अभी रोशन है तेरे गम शबिस्ता के दिये,
आज मैं मौत के गारो मे उतर जाऊगा ।
और दम तोडती बत्ती के धुए के हमराह,
सरहदे - मर्गे - मुसलसल से[11] गुजर जाऊगा ॥



---

१ वध-स्थल मे २ कल के ३ कल्पना से ४ कष्ट ५ अधेरा
६ वातावरण पर ७ छाया हुआ ८ बूँद-बूँद टपकना ९ काला (दु ख-पूर्ण)
१० अत्याचार पीडित मनुष्य ११ निरतर मृत्यु की सीमा से

फिर वही कुंजे-कफस [१]

चन्द लम्हो के लिए शोर उठा डूब गया,
कुहना[२] जजीरे - गुलामी की गिरह कट न सकी।
फिर वही सैले-बला[३] है, वही दामे-ग्रमवाज,
नाखुदाग्रो मे[४] सफीने की[५] जगह बट न सकी ॥

टूटते देखके देरीना तग्रत्तुल[७] का फुसू,
नब्जे-उम्मीदे-वतन[९] उभरी, मगर डूब गई।
पेशवाग्रो को[१०] निगाहो मे तजब्जब[११] पाकर
टूटती रात के साये मे सहर[१२] डूब गई ॥

मेरे महबूब वतन! तेरे मुकद्दर के[१३] खुदा,
दस्ते-ग्रगियार मे[१४] किस्मत की इना[१५] छोड गये।
ग्रपनी यक-तर्फा[१६] सियासत के तकाजो के तुफैल,
एक बार ग्रौर तुझे नौहा - कना[१७] छोड गये ॥

फिर वही गोशा ए-जिंदा[१८] है वही तारीकी[१९],
फिर वही कुहना सलासिल[२०], वही खूनी झनकार।
फिर वही भूख से इन्सा की सितेजा-कारी[२१],
फिर वही माग्रो के नौहे[२२], वही बच्चो की पुकार ॥

---

१ पिंजर का कोना
"फिर वही कुंजे-कफस फिर वही सयाद का घर"

२ पुरानी ३ ग्रापत्तियो का तूफान (ग्राधिक्य) ४ लहरों का जाल ५ नावकों मे ६ नौका की ७ पुराना गत्यवरोध ८ जादू ९ देश की ग्राशा की नब्ज १० नेताग्रों की ११ ग्रसमजस १२ सुबह १३ भाग्य के १४, गैरो के हाथ मे १५ बागडोर १६ एक पक्षीय १७ ग्रार्तनाद करते हुए १८ जेल का कोना १९ ग्रघेरा २० पुरानी जजीरें २१ जूझना २२ विलाप

तेरे रहबर[1] तुझे मरने के लिए छोड चले,
अर्ज़े-बगाल[2] ! इन्हे डूबती सासो से पुकार।
बोल चटगाव की मज़लूम खमोशी ! कुछ बोल,
बोल ऐ पीप से रिसते हुए सीनो की बहार।

भूख और कहत के तूफान बढे आते है,
बोल ऐ इस्मतो इफ्फत के[3] जनाज़ो की कतार।
रोक इन लौटते कदमो को, इन्हे पूछ ज़रा,
पूछ ऐ भूख से दम तोडते ढाचो की कतार॥

ज़िदगी जब्र के साचे मे ढलेगी कब तक ?
इन फज़ाओ मे अभी मौत पलेगी कब तक ?

(शिमला कान्फ्रेंस की असफलता पर लिखी गई)



---

१ पथ प्रदर्शक २ बगाल की भूमि ३ सतीत्व और नारीत्व

अशआर

नफ्स के[१] सोच मे रम[२] ही नही, कुछ और भी है
हयात[३] सागरे-सम[४] ही नही, कुछ और भी है

तेरी निगाह मेरे गम की पासदार[५] सही
मेरी निगाह मे गम ही नही कुछ और भी है

मेरी नदीम[६] ! मोहब्बत की रिफअतो से[७] न गिर
बुलद, बामे-हरम[८] ही नही, कुछ और भी है

ये इज्तिनाब है अक्से - शऊरे - महबूबी[१०]
ये एहतियात[११], सितम ही नही, कुछ और भी है

इधर भी एक उचटती नजर, कि दुनिया मे
फरोगे-महफिले जम[१२] ही नही, कुछ और भी है

नये जहान बसाये है फिक्रे - आदम ने[१३]
अब इस जमी पे इरम[१४] ही नही कुछ और भी है

---

१ श्वासो के २ जाने का सकेत ३ जीवन ४ विष का सागर ५ लिहाज रखने वाली ६ साथी ७ ऊँचाइयों से ८ ऊचा स्थान केवल हरम-सराय की छत (ही नही) ९ विमुखता १० तुम्हे अपने प्रेयसी होने के ज्ञान का प्रतिबिम्ब ११ सावधानी १२ बादशाह (जमशेद) की महफिल का उत्थान १३ मानव चिंतन ने १४ स्वर्ग

नूरजहा के मजार पर

पहलुए-शाह मे[1] ये दुख्तरे-जमहूर को[2] कब्र,
कितने गुमगश्ता फसानो का[3] पता देती है।
कितने खूरेज हकायक से[4] उठाती है नकाब,
कितनी कुचली हुई जानो का पता देती है॥

कैसे मगरूर शहनशाहो की तसकी के लिए,
सालहा-साल हसीनाम्रो के बाजार लगे।
कैसी बहकी हुई नजरो के तअय्युश[5] के लिए,
सुर्ख महलो मे जवा जिस्मो के अवार लगे॥

कैसे हर शाख से मुह-बद महकती कलिया,
नोच ली जाती थी तजइने-हरम[6] की खातिर।
और मुर्झा के भी आजाद न हो सकती थी,
जिल्ले-सुबहान की[7] उल्फत के भरम की खातिर॥

कैसे इक फर्द के[8] होटो की जरा सी जुबिश,
सर्द कर सकती थी बेलौस[9] वफाम्रो के चिराग।
लूट सकती थी दमकते हुए माथो का सुहाग,
तोड सकती थी मये-इश्क से[10] लबरेज अयाग[11]॥

---

१ बादशाह की बगल मे २ जनता की बेटी की ३ भूली बिसरी कहानियो का ४ रक्तिम घटनाम्रो से ५ विलास ६ हरम की शोभा ७ बादशाह ८ व्यक्ति के ९ निष्काम ११ प्रेम-रूपी मदिरा से १२ भरे हुए प्याले

सहमी-सहमी सी फजाओं मे ये वीरां मरकद[1],
इतना खामोश है, फरियाद - कुना[2] हो जैसे।
सर्द शाखो मे हवा चीख रही है ऐसे,
रूहे - तकदीसो - वफा[3] मसियाख्वां[4] हो जैसे॥

तू मेरी जान! मुझे हैरतो - हसरत[5] से न देख,
हम में कोई भी जहांनूरो - जहांगीर नही।
तू मुझे छोड के ठुकरा के भी जा सकती है,
तेरे हाथो मे मेरे हाथ हैं, जंजीर नही॥



१ कब्र २ न्याय की दुहाई दे रहा हो ३ प्रेम तथा पवित्रता की आत्मा
४ विलाप कर रही हो ५ आश्चर्य और उत्कंठा

जागीर

फिर उसी वादी ए-शादाब मे[1] लौट ग्राया हू,
जिसमे पिनहा[2] मेरे ख्वाबो की तरबगाहे[3] हैं।
मेरे ग्रहबाब के[4] सामाने - तग्रय्युश[5] के लिए,
शोख सीने है, जवा जिस्म, हसी बांहे है॥

सब्ज खेतो मे ये दुबकी हुई दोशीजाये[6],
इनकी शरयानो मे[7] किस किसका लहू जारी है ?
किस मे जुरत है कि इस राज की तशहीर[8] करे ?
सबके लब पर मेरी हैबत का फुसू[9] तारी है[10]॥

हाए वो गम - ग्रो - दिलावेज[11] उबलते सीने,
जिनसे हम सतवते-ग्राबा का[12] सिला[13] लेते है।
जाने इन मरमरी[14] जिस्मो को ये मरियल दहका[15],
कैसे इन तीरा[16] घरौदो म जनम देते हैं ?

ये लहकते हुए पौदे, ये दमकते हुए खेत,
पहले ग्रजदाद की[17] जागीर थे ग्रब मेरे हैं।
ये चरागाह, ये रेवड, ये मवेशी, ये किसान,
सबके सब मेरे है, सब मेरे है, सब मेरे हैं॥

---

१ हरी भरी घाटी २ निहित ३ क्रीड़ा-स्थल ४ [illegible] ५ भोग विलास की सामग्री ६ कुमारिया ७ रगों मे ८ [illegible] ९ [illegible] १० छाया हुआ है ११ गम और मनोरम १२ [illegible] १३ बदला १४ सगमरमर के बने १५ किसान १६ [illegible] १७ पूर्वजों की

इनकी मेहनत भी मेरी, हासिले-मेहनत[1] भी मेरा,
इनके बाज़ू भी मेरे, कुव्वत-बाज़ू[2] भी मेरी।
मै खुदावद[3] हू इस वुसअते - बेपाया का[4],
मौजे-आरिज[5] भी मेरी, नकहते-गेसू[6] भी मेरी ॥

मै उन अजदाद का बेटा हू जिन्होने पैहम[7],
अजनबी कौम के साये की हिमायत की है।
गदर की साअते-नापाक से[8] लेकर अब तक,
हर कडे वक्त मे सरकार की खिदमत की है ॥

खाक पर रेंगने वाले ये फसुर्दा[9] ढाचे,
इनकी नजरें कभी तलवार बनी हैं न बनें।
इनकी गैरत पे हर इक हाथ झपट सकता है,
इनके अबरू की[10] कमानें न तनी है न तनें ॥

हाए ये शाम, ये झरने, ये शफक की लाली,
मैं इन आसूदा फज़ाओ मे[11] ज़रा झूम न लू ?
वो दबे पाँव उधर कौन चली जाती है ?
बढके उस शोख के तरशे हुए लब चूम न लू ?

---

१ परिश्रम का फल २ बांहों की शक्ति ३ भगवान ४ असीम विशालता
५ कपोलों की (अ पदा होने वाली) लहरें ६ केशों की सुगन्ध ७ निरंतर
८ अशुभ क्षण ९ शिथिल १० भृकुटि की ११ आनन्द-वर्धक वातावरण मे

मादाम

आप बे-वजह परीशान-सी क्यो है मादाम[1] ?
लोग कहते हैं तो फिर ठीक ही कहते होगे।
मेरे अहबाब ने[2] तहज़ीब न सीखी होगी,
मेरे माहौल मे[3] इन्सान न रहते होगे ॥

नूरे-सर्माया से[4] है रूए-तमद्दुन की[5] जिला[6],
हम जहा है वहा तहज़ीब नही पल सकती।
मुफिलसी हिस-ए-लताफत को[7] मिटा देती है,
भूख आदाब के[8] साचो मे नही ढल सकती ॥

लोग कहते हैं तो लोगो पे तअज्जुब कैसा ?
सच तो कहते है कि नादारो की[9] इज्ज़त कैसी ?
लोग कहते हैं—मगर आप अभी तक चुप है,
आप भी कहिये गरीबो मे शराफत कैसी ?

नेक मादाम ! बहुत जल्द वो दौर आयेगा,
जब हम जीस्त के अदवार[10] परखने होगे।
अपनी ज़िल्लत की कसम, आपकी अज़मत की[11] कसम,
हम को ताअज़ीम के[12] मेआर[13] परखने होगे ॥

---

१ 'मैडम' का उर्दू रूपान्तर २ मित्रो ने ३ वातावरण मे ४ पूंजी के प्रकाश से ५ सभ्यता के चेहरे की ६ चमक ७ कोमलता के भाव को ८ शिष्टता ९ निर्धनो की १० जीवन के युग ११ महानता की १२ शिष्टाचार के १३ आदर्श या मापदंड

हम ने हर दौर[1] मे तज़लील[2] सही है लेकिन,
हम ने हर दौर के चेहरे को ज़िया[3] बख़्शी है।
हम ने हर दौर मे मेहनत के सितम झेले है,
हम ने हर दौर के हाथो को हिना[4] बख़्शी है ॥

लेकिन इन तल्ख़ मुबाहिस से[5] भला क्या हासिल ?
लोग कहते हैं तो फिर ठीक ही कहते होगे।
मेरे अहबाब ने तहज़ीब न सीखी होगी,
मैं जहा हू वहा इसान न रहते होगे ॥



---

१ काल मे २ अपमान ३ चमक-दमक ४ मेहँदी ५ कटु विवादो से

ये किसका लहू है

(जहाजियों की बगावत—फरवरी १९४६)

ऐ रहबरे - मुल्को - कौम[1] जरा
आँखें तो उठा, नजरें तो मिला
कुछ हम भी सुनें, हम को भी बता!
ये किसका लहू है, कौन मरा?

धरती की सुलगती छाती के बेचैन [illegible] हैं
तुम लोग जिन्हे अपना न सके, वो [illegible] हैं
सड़कों की जबां चिल्लाती है, [illegible] हैं

ये किसका लहू है, कौन मरा?
ऐ रहबरे - मुल्को - कौम जरा!
ये किसका लहू है, कौन मरा?

वो कौन-सा जज्बा था जिससे [illegible] हिला
झुलसे हुए वीरां गुलशन में [illegible] खिला
जनता का लहू फौजों से [illegible] मिला

ऐ रहबरे - मुल्को - कौम जरा
ये किसका लहू है, कौन मरा?
ऐ रहबरे - मुल्को - कौम जरा

क्या कौमो-वतन की [illegible]
जो देश का [illegible][4] [illegible]
जो बारे-गुलामी[5] [illegible]

---

१ देश और कौम के [illegible] [illegible] ३ [illegible]
५ गुलामी का [illegible]

ये किसका लहू है, कौन मरा ?
ऐ रहवरे - मुल्को - कौम बता
ये किसका लहू है, कौन मरा ?

ऐ अज्मे - फना[1] देने वालो, पैगामे-बका[2] देने वालो !
अब आग से कतराते क्यो हो, शोलो को हवा देने वालो !
तूफान से अब क्यो डरते हो, मौजो को[3] सदा[4] देने वालो !

क्या भूल गये अपना नारा ?
ऐ रहवरे - मुल्को - कौम बता
ये किसका लहू है, कौन मरा ?

समझौते की उम्मीद सही, सरकार के वायदे ठीक सही
हा मश्के-सितम[5] अफसाना सही, हा प्यार के वायदे ठीक सही
अपनो के कलेजे मत छेदो, अगियार के[6] वायदे ठीक सही

जमहूर से[7] यू दामन न छुडा
ऐ रहवरे मुल्को - कौम बता
ये किसका लहू है, कौन मरा ?

हम ठान चुके है अब जी म हर जालिम से टकरायेंगे
तुम समझौते की आस रखो, हम आगे बढते जायेंगे
हर मजिले-आजादी की कसम, हर मजिल पे दोहरायेंगे

ये किसका लहू है, कौन मरा ?
ऐ रहवरे - मुल्को - कौम बता
ये किसका लहू है, कौन मरा ?

---

१ मृत्यु का सकल्प २ जीवन-सदेश ३ लहरो को ४ आवाज
५ अत्याचार का अभ्यास ६ गैरों के ७ जनता से

मफाहमत[1]

नशेबे - अर्ज़ पे[2] ज़र्रों को मुश्तअ़ल[3] पाकर,
बुलन्दियों पे सफ़ेद और सियाह[4] मिल ही गये।
जो यादगार थे बाहम[5] सितेज़ाकारों की[6],
ब-फ़ैज़े-वक़्त[7] वो दामन के चाक सिल ही गये॥

जिहाद[8] ख़त्म हुआ, दौरे - आशती[9] आया,
सभल के बैठ गये महफ़िलों में[10] दीवाने।
हुजूमे - तिश्नालबों की[11] निगाह से ओझल,
झलक रहे हैं शराबे - हवस[12] के पैमाने॥

ये जश्न, जश्ने - मसर्रत[13] नहीं, तमाशा है,
नये लिबास में निकला है रहज़नी का[14] जुलूस।
हज़ार शम्मए - उख़ुवत[15] बुझाके चमके हैं,
ये तीरगी के[16] उभारे हुए हसीं फ़ानूस॥

ये शाख़े - नूर[17] जिसे ज़ुलमतों ने[18] सींचा है,
अगर फली तो शरारों के फूल लायेगी।
न फल सकी तो नई फ़स्ले-गुल के[19] आने तक,
ज़मीरे - अर्ज़ में[20] इक ज़हर छोड जायेगी॥

(बम्बई, १५ अगस्त १९४७—स्वतन्त्रता दिवस)

---

१ समझौता २ धरती की ढलान पर ३ उत्तेजित ४ गोरे और काले ५ परस्पर ६ लडाई झगडे की ७ समय की कृपा से (के कारण) ८ धर्म युद्ध ९ मित्रता का युग १० ऊंटो के कजावो म (लैला मजनू के किस्से की ओर संकेत है।) ११ प्यासो के गिरोह की १२ लोलुपता रूपी शराब १३ खुशी का उत्सव १४ डाका मारने का १५ मानव समानता के दीपक १६ अंधकार के १७ प्रकाश की शाखा १८ अंधेरों ने १९ वसन्त ऋतु के २० धरती की आत्मा

आज

साथियो ! मैंने बरसो तुम्हारे लिए
चाद, तारो बहारो के सपने बुने
हुस्न और इश्क के गीत गाता रहा
आरजूओ के[1] ऐवा[2] सजाता रहा
मै तुम्हारा मुगन्नी[3], तुम्हारे लिए
जब भी आया नये गीत लाता रहा
आज लेकिन मेरे दामने-चाक मे[4]
गर्दे-राहे-सफर के[5] सिवा कुछ नही
मेरे बरबत के[6] सीने मे नग्मो का दम घुट गया है
ताने चीखो के अबार मे दब गई हैं
और गीतो के सुर हिचकिया बन गये है
मैं तुम्हारा मुगन्नी हू, नग्मा नही हू
और नग्मे की तख्लीक का[7] साजो-सामाँ
साथियो ! आज तुमने भसम कर दिया है
और मैं—अपना टूटा हुआ साज थामे
सर्द लाशो के अबार को तक रहा हू
मेरे चारो तरफ मौत की वहशतें नाचती हैं
और इन्सान की हैवानियत जाग उठी है
बर्बरियत[8] के खूख्वार इफरीत[9]
अपने नापाक जबडो को खोले

---

१ आकाक्षाओ के २ महल ३ गायक ४ फटी हुई झोली मे ५ यात्रा के मार्ग की धूलि ६ वाजे के ७ रचना का ८ बबरता ९ हिंस्र देव

खून पी-पीके गुर्रा रहे है
बच्चे माओ की गोदो मे सहमे हुए है
इस्मतें[१] सर-बरहना[२] परीशान हैं
हर तरफ शोरे-आहो बुका[३] है
और मै इस तबाही के तूफान मे
आग और खून के हेजान[४] मे,
सरनिगू[५] और शिकस्ता मकानो के मलबे से पुर रास्ता पर
अपने नग्मो की झोली पसारे
दर-ब दर फिर रहा हू
मुझको अम्न और तहजीब की भीख दो
मेरे गीतो की लै, मेरे सुर मेरी नै[६]
मेरे मजरूह[७] होटा को फिर साप दो
साथियो ! मैने बरसो तुम्हारे लिए
इन्कलाब और बगावत के नग्मे अलापे
अजनबी राज के जुल्म की छाव मे
सरफरोशी के[८] ख्वाबीदा जज्बे[९] उभारे
और उस सुबह की राह देखी
जिसमे इस मुल्क की रूह आजाद हो
आज जजीरे-महकूमियत[१०] कट चुकी है
और इस मुल्क के बहरो बर[११] बामो दर[१२]
अजनबी कौम के जुल्मत अफशा फरेरे[१३] की मनहूस
छाओ से आजाद है
खेत सोना उगलने को बेचैन हैं

---

१ सतीत्व २ सिर से पर तक नगी ३ आर्तनाद ४ प्रचडता ५ सिर झुकाए ६ बासुरी ७ घायल ८ सिर बेचने (मरने) के ९ सोई हुई भावनायें १० परतन्त्रता की जजीर ११ सागर और धरती १२ छतें और दरवाजे १३ अधकार फैलाते हुए झडे

वादियाँ लहलहाने को बेताब है
कोहसारों के[1] सीने मे हेजान[2] है
संग और खिश्त[3] बेख्वाबो-बेदार[4] हैं
उनकी आखो मे तामीर के[5] ख्वाब हैं
उनके ख्वाबो को तकमील का[6] रूप दो
मुल्क की वादिया, घाटिया, खेतिया
औरतें, बच्चिया—
हाथ फैलाए खैरात की[7] मुन्तजिर[8] है
उनको अम्न और तहजीब की भीख दो
माओ को उनके होंटो की शादाबिया
नन्हे बच्चो को उनकी खुशी बख्श दो
मुल्क की रूह को जिन्दगी बख्श दो
मुझको मेरा हुनर[9], मेरी लै बख्श दो
मेरे सुर बख्श दो, मेरी नै बख्श दो
आज सारी फजा[10] है भिखारी
और मै इस भिखारी फजा मे
अपने नग्मो की झोली पसारे
दर-ब-दर फिर रहा हू
मुझको फिर मेरा खोया हुआ साज दो
मै तुम्हारा मुगनी, तुम्हारे लिए
जब भी आया, नये गीत लाता रहूगा ।

(११ सितम्बर १९४७—आकाश वाणी, दिल्ली)

---

१ पर्वत मालाओ के २ प्रचडता ३ पत्थर और ईंट ४ जागे हुए ५ निर्माण या उसारी के ६ पूर्ति का ७ भीख की ८ प्रतीक्षा कर रही हैं ९ कला १० वातावरण

ग़ज़ल

सरवज़ारो पे[1] क्या बीती, सनमख़ानो पे[2] क्या गुज़री ?
दिले-ज़िन्दा[3] ! तेरे मरहूम[4] अरमानों पे क्या गुज़री ?

ज़मी ने खून उगला, आसमा ने आग बरसाई,
जब इन्सानो के दिन बदले तो इन्सानो प क्या गुज़री ?

हमे ये फ़िक्र, उनकी अंजुमन[5] किस हाल मे होगी,
उन्हे ये गम कि उनसे छुट के दीवानो पे क्या गुज़री।

मेरा इल्हाद[6] तो ख़ैर एक लानत था सो है अब तक।
मगर इस आलमे-वहशत म[7] ईमानो प क्या गुज़री ?

ये मंज़र कौन-सा मन्ज़र है पहचाना नही जाता।
सियह खानो[8] से कुछ पूछो, शबिस्तानो[9] पे क्या गुज़री ?

चलो वो कुफ़्र[10] के घर से सलामत आ गये, लेकिन।
खुदा की मुम्लकत मे[11] सोख़ता जानो[12] पे क्या गुज़री ?

(पाकिस्तान)

---

१ क्रीडा स्थलो पर २ मन्दिरो पर ३ जीवित हृदय ४ मृत ५ महफिल ६ नास्तिकता ७ बबरता की स्थिति मे ८ अंधेरे घरो (खंडहरों) से ९ शयनागारो पर १० काफिरो की बस्ती के ११ राज्य मे १२ जली हुई आत्माओ (जीवो) पर

नया सफर है, पुराने चिराग गुल कर दो !

फरेबे - जन्नते - फर्दा के[१] जाल टूट गये,
हयात[२] अपनी उमीदो पे शर्मसार[३] सी है।
चमन मे जश्ने वुरूदे बहार[४] हो भी चुका,
मगर निगाहे - गुलो - लाला[५] सोगवार[६] सी है ॥

फजा[७] में गम बगूलो का रक्स[८] जारी है,
उफक पे[९] खून की मीना[१०] छलक रही है अभी।
कहा वो मेहरे - मुनव्वर[११], कहा वो तनवीरें[१२]
कि बामो दर पे[१३] सियाही झलक रही है अभी ॥

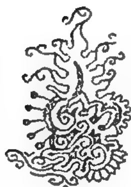
फजायें[१४] सोच रही है कि इब्ने - आदम ने[१५],
खिरद[१६] गवाके, जुनू[१७] आजमाके क्या पाया ?
वही शिकस्ते-तमन्ना[१८], वही गमे-अय्याम[१९],
निगारे-जीस्त[२०] ने सब कुछ लुटाके क्या पाया ?

भटक के रह गईं नजरे खला[२१] की वुसअत[२२] मे,
हरीमे-शाहिदे-रअना[२३] का कुछ पता न मिला।
तवील राहगुजर[२४] खत्म हो गई, लेकिन,
हनोज[२५] अपनी मुसाफत का[२६] मुन्तहा[२७] न मिला ॥

---

१ भविष्य के स्वर्ग के धोखे के २ जीवन ३ लज्जित ४ वसन्त के आगमन का उत्सव ५ फूलों की नजर ६ उदास ७ वातावरण ८ नृत्य ९ क्षितिज पर १० सुराही ११ दीप्त सूरज १२ उजाले १३ छत और दरवाजे पर १४ वातावरण १५ मानव जाति ने १६ बुद्धि १७ उन्माद १८ आशा का टूटना १९ सांसारिक दुख २० जीवन की सुंदरी २१ शून्य २२ विशालता २३ सुन्दर प्रेयसी का रनिवास २४ मार्ग २५ अभी तक २६ यात्रा का २७ अंत (मंजिल)

सफर-नसीब रफीको[1] ! कदम बढाए चलो,
पुराने राहनुमा[2] लौट कर न देखेंगे।
तुलूए - सुब्ह[3] से तारो की मौत होती है,
शबो[4] के राज - दुलारे इधर न देखेंगे॥



१ सहचर मित्रो २ पथप्रदर्शक ३ प्रभातोदय ४ रातो क

शिकस्ते-ज़िन्दा[1]

[उस चीनी शायर को—जिसने चियागकाई शैक की जेल मे लिखा "बीस साल कैद ! कागज के एक पुर्जे पर लिखे हुए कुछ लफ्जो के जुर्म म हो सकता है मैं बीस साल तक सूरज की शक्ल न देख सकू। लेकिन क्या तुम्हारा यह गला सडा निजाम जो हर घडी बिजली की सी तेजी के साथ अपनी मौत की तरफ बढ रहा है, बीस साल तक बाकी रह सकेगा ?]

खबर नही कि बलाखाना - ए - सलासिल मे[2]
तेरी हयाते - सितम - आशना पे[3] क्या गुजरी
खबर नही कि निगारे सहर की[4] हसरत मे
तमाम रात चिरागे - वफा पे[5] क्या गुजरी

मगर वो देख फजा मे[6] गुबार-सा उट्ठा
वो तेरे सुर्ख जवानो के राहवर[7] आए
नजर उठा कि वो तेरे वतन के मेहनतकश[8]
गले से कुहना[9] गुलामी का तौक[10] उतार आए

उफक पे[11] सुबहे-बहारा का[12] आमद-आमद[13] है
फजा मे सुर्ख फरेरो के[14] फूल खिलते है
जमीन खदा-ब-लब है[15] शफीक[16] मा की तरह
कि इसकी गोद मे बिछडे रफीक[17] मिलते हैं

---

१ कारागार का टूटना २ कारागार रूपी विपत्तिगृह ३ अत्याचार से परिचित जीवन (जिस पर अत्याचार हुए हो) ४ प्रभात की सुदरी ५ वफा रूपी दीपक ६ वातावरण मे ७ पथप्रदर्शक ८ श्रमजीवी ९ पुरानी १० पटा ११ क्षितिज पर १२ वसन्त का प्रभात १३ आगमन १४ झडों के १५ मुस्करा रही है १६ ममताभरी १७ साथी

शिकस्ते-महबस-ओ-ज़िंदा[1] का वक्त आ पहुचा
वो तेरे ख्वाब हकीकत मे ढल आये हैं
नज़र उठा कि तेरे देश की फज़ाओ पर
नई बहार नई जन्नतो के साये हैं

दरीदा तन[2] है वो कहबा ए सीमो-ज़र[3] जिसको
बहुत गुमान थे लाए थे क़ातिलाने-कुहन[4]
रबाब[5] छेड़, गज़ल-ख्वा हो[6], रक्स-फर्मा हो[7]
कि जश्ने-नुसरते मेहनत[8] है जश्ने-नुसरते फ़न[9]

मैं तुझ से दूर नही लेकिन ए रफ़ीक़[10] मेरे
तेरी वफा को मेरी अहदे-मुस्तकिल[11] का सलाम
तेरे वतन को, तेरी अर्ज़े-बा-हमीयत को[12]
धड़कते बोलते हिन्दोस्ता के दिल का सलाम



---

१ कारागारों और क़ैदघरों के टूटने का २ भग्न शरीर ३ पूंजी (साम्राज्य) की वेश्या ४ पुराने जुवारी ५ साज़ ६ गीत गाओ ७ नृत्य करो ८ श्रम की विजय का उत्सव ९ कला की विजय का उत्सव १० साथी ११ स्थायी सकल्प १२ गौरवशील धरती को

लहू नज़्र[1] दे रही है हयात[2] !

मेरे जहां मे समनज़ार[3] ढूंढने वाले
यहां बहार नही आतशी बगूले[4] हैं
धनुक के रग नही, सुरमई फिज़ाओ मे
उफक से ता-ब-उफक[5] फांसियो के झूले हैं

फिर एक मजिले-खू-बार[6] की तरफ है रवां[7]
वो रहनुमा[8] जो कई बार राह भूले हैं

बुलद दावा-ए-जमहूरियत[9] के पर्दे मे
फरोगे महब्स-ओ-जिदां[10] है, ताजियाने[11] हैं
ब नामे-अम्न[12] है जगो-जदल के मनसूबे
ब शोरे-अद्ल[13], तफावुत के[14] कारखाने हैं

दिलो पे खौफ के पहरे, लबो पे[15] कुफ्ले सुकूत[16]
सिरो पे गर्म सलाखो के शामियाने है

मगर मिटे है कही जब्र और तशद्दुद से[17]
वो फल्सफे कि जिला[18] दे गये दिमागो को
कोई सिपाहे-सितमपेशा[19] चूर कर न सकी
बशर की[20] जागी हुई रूह के अयागो का[21]

---

१ भेंट २ ज़िन्दगी ३ उपवन ४ अग्नि बवडर ५ क्षितिज से क्षितिज तक ६ लहू बिखेरनी मजिल ७ चल रहे हैं ८ पथ प्रदर्शक ९ जनतत्र के ऊचे दावे १० कारागारों का उत्थान ११ कोडे १२ शांति के नाम पर १३ न्याय के शोर के साथ १४ भेद भाव १५ होंटो पर १६ चुप्पी के ताले १७ हिंसा से १८ चमक १९ ज़ालिम सेना २० मानव की २१ पात्रों को

कदम-कदम पे लहू नज्र दे रही है ह्यात
सियाहियो से उलझते हुए चिरागो को

रवां है काफला ए-इर्तिका ए इन्सानी[1]
निज़ामे-ग्रातिशो ग्राहन का[2] दिल हिलाये हुए
बगावतो के दुहल[3] बज रहे हैं चार तरफ
निकल रहे है जवां मशग्रलें जलाये हुए

तमाम ग्रर्जे जहा[4] खौलता समुन्दर है
तमाम कोहो-बयावां[5] हैं तिलमिलाये हुए

मेरी सदा[6] को दबाना तो खैर मुमकिन है
मगर ह्यात की ललकार कौन रोकेगा
फसीले ग्रातिशो ग्राहन[7] बहुत बुलद सही
बदलते वक्त की रफ्तार कौन रोकेगा

नये खयाल की परवाज[8] रोकने वालो
नये ग्रवाम की तलवार कौन रोकेगा

पनाह लेता है जिन महवसो की[9] तीरा निजाम
वही से सुवह के लशकर निकलने वाले है
उभर रहे है फजाग्रो म ग्रहमरी[10] परचम[11]
किनारे मशरिको मगरिव के मिलने वाले है

हजार बर्क[12] गिरे लाख ग्राधिया उट्ठे
वो फूल खिल के रहेगे जो खिलने वाले है

---

१ मानव विकास का काफला २ ग्राग ग्रौर लोहे के राज्य का ३ ढोल ४ ससार (की धरती) ५ पवत, जगल ६ ग्रावाज ७ लोह ग्रौर ग्राग की फसील (प्राचीर) ८ उडान ९ कारागारो की १० सुर्ख ११ झडे १२ बिजली

आवाज़े-आदम

दबेगी कब तलक आवाज़े-आदम[1] हम भी देखेंगे
रुकेंगे कब तलक जज़्बाते-बरहम[2] हम भी देखेंगे
चलो यूं ही सही ये जौरे-पैहम[3] हम भी देखेंगे

दरे - ज़िंदा से[4] देखें, या उरूजे - दार से[5] देखें
तुम्हे रुसवा सरे - बाज़ारे - आलम[6] हम भी देखेंगे
ज़रा दम लो मआले-शौकते-जम[7] हम भी देखेंगे

ब-ज़ोमे - कुव्वते - फौलादो - आहन[8] देख लो तुम भी
ब-फैज़े - जज़्बा - ए - ईमाने - मोहकम[9] हम भी देखेंगे
जबीने-कज-कुलाही[10] खाक पर खम[11] हम भी देखेंगे

मुकाफाते-अमल[12], तारीख की कुहना[13] रिवायत[14] है
करोगे कब तलक नावक[15] फराहम[16], हम भी देखेंगे
कहा तक है तुम्हारे जुल्म मे दम हम भी देखेंगे

ये हगामे विदा ए-शब[17] है, ऐ जुलमत के[18] फरज़दो[19]
सहर के[20] दोश पर[21] गुलनार परचम[22] हम भी देखेंगे
तुम्हे भी देखना होगा यह आलम[23], हम भी देखेंगे

(पाकिस्तान म प्रगतिशील लेखको, शायरो
और पत्रकारो की गिरफ्तारी पर)

---

१ मानव की आवाज़ १ प्रचड भावनायें ३ निरतर अत्याचार ४ कारागार के द्वार से ५ सूलियो की ऊचाई से ६ ससार रूपी बाजार म ७ बादशाही ठाठ का अतिम क्रियाकम ८ लोहे की शक्ति के घमड पर ९ दृढ विश्वास के भाव की कृपा से १० टेढी टोपिया (ताज) रखने वाले माथे ११ झुके हुए १२ कर्मों का बदला (किये की सज़ा) १३ पुरानी १४ परम्परा १५ तीर १६ इकट्ठे करना १७ रात के जाने की घडी १८ अधकार के १९ बेटो २० सुबह के २१ कधे पर २२ गुलाबी झडा २३ हालत

ग़ज़ल

जब कभी उनकी तवज्जोह में कमी पाई गई
अज़ - सरे - नौ[1] दास्ताने - शौक़[2] दोहराई गई

बिक गये जब तेरे लब[3] फिर तुझको क्या शिकवा, अगर
जिन्दगानी बादा - ओ - सागर से[4] बहलाई गई

ऐ गमे-दुनिया तुझे क्या इल्म[5] तेरे वास्ते
किन बहानों से तबीयत राह पर लाई गई

हम करें तर्के-वफ़ा[6], अच्छा चलो यूं ही सही
और अगर तर्के-वफ़ा से भी न रुसवाई गई

कैसे-कैसे चश्मो-आरिज़[7] गर्दे - गम से[8] बुझ गये
कैसे - कैसे पैकरों की[9] शाने - जेबाई[10] गई

दिल की धड़कन में तवाज़ुन[11] आ चला है, खैर हो
मेरी नजरें बुझ गईं या तेरी रअनाई[12] गई

उनका गम उनका तसव्वुर[13] उनके शिकवे अब कहां
अब तो ये बातें भी ऐ दिल ! हो गईं गाई - गई

जुरते इन्सां पे[14] गो तादीब के[15] पहरे रहे
फितरते - इन्सां को[16] कब जंजीर पहनाई गई

अर्सा ए-हस्ती में[17] अब तेशाजनों[18] का दौर है
रस्मे - चंगेज़ी[19] उठी, तौकीरे - दाराई[20] गई

---

१ नये सिरे से २ प्रेम कथा ३ होंठ ४ शराब और प्याले में ५ ज्ञान ६ प्रेम का परित्याग ७ नेत्र और कपोल ८ गम की धूल से ९ शरीरों (सुंदरियों) की १० शृंगार की शान ११ संतुलन १२ सौंदर्य १३ कल्पना १४ मानव साहस १५ शिक्षण रूपी दंड के १६ मानव प्रकृति को १७ संसार रूपी क्षेत्र में १८ कुदाल वाला का, अर्थात श्रमजीवियों का (फरहाद की ओर संकेत है) १९ चंगेज़ ऐसे (अत्याचारी) राजाओं की नीति २० बादशाही सम्मान

मताअ ए गर[1]

मेरे ख्वाबो के झरोको को सजाने वालो
तेरे ख्वाबो मे कही मेरा गुजर है कि नही
पूछकर अपनी निगाहो से बता दे मुझको
मेरी राहो के मुकद्दर मे[2] सहर[3] है कि नही

चार दिन की ये रफाकत[4] जो रफाकत भी नही
उम्र भर के लिए आजार[5] हुई जाती है
जिन्दगी यू तो हमेशा से परीशान सी थी
अब तो हर सास गिराबार[6] हुई जाती है

मेरा उजडी हुई नीदो के शबिस्तानो मे[7]
तू किसी ख्वाब के पैकर[8] की तरह आई है
कभी अपनी सी, कभी गैर नजर आती है
कभी इखलास[9] की मूरत कभी हरजाई है

प्यार पर बस तो नही है मेरा, लेकिन फिर भी
तू बतादे कि तुझे प्यार करू या न करू
तूने खुद अपने तबस्सुम से[10] जगाया है जिन्हे
उन तमन्नाओ का इजहार करू या न करू

तू किसी और के दामन की कली है लेकिन
मेरी रात तेरी खुशबू से बसी रहती है
तू कही भी हो तेरे फूल से आरिज की[11] कसम
तेरी पलके मेरी आखो पे झुकी रहती हैं

---

१ गर की सम्पत्ति २ भाग्य मे ३ प्रभात ४ साथ ५ रोग ६ असह्य
७ शयनागारो म ८ आकार ९ निस्वार्थता (प्रेम) १० मुस्कराहट स
११ गालो की

तेरे हाथो की हरारत[1], तेरे सासो की महक
तैरती रहती हैं एहसास की[2] पहनाई मे[3]
ढूढती रहती हैं तखईल की[4] बाहें तुझको
सर्द रातो की सुलगती हुई तनहाई म

तेरा अल्ताफो-करम[5] एक हकीकत[6] है मगर
ये हकीकत भी हकीकत म फसाना[7] ही न हो
तेरी मानूस निगाहो का[8] ये मोहतात पयाम
दिल के ख करने का इक और बहाना हो न हो

कौन जाने मेरे इमरोज का[9] फर्दा[10] क्या है
कुरबतें[11] बढ के पशेमान[12] भी हो जाती है
दिल के दामन से लिपटती हुई रगी नजरें
देखते - देखते अनजान भी हो जाती है

मेरी दरमादा[13] जवानी की तमन्नाओ के
मुजमहिल[14] ख्वाब की ताबीर[15] बतादे मुझको
तेरे दामन मे गुलिस्ता भी है वीराने भी
मेरा हासिल[16] मेरी तकदीर बतादे मुझको



१ गर्मी २ चेतना की ३ विस्तीर्णता मे ४ कल्पना की ५ कृपा, अनुकम्पा ६ वास्तविकता ७ कहानी ८ प्रेम युक्त नज़रो का ९ आज का १० कल ११ सामीप्य, प्रेम १२ लज्जित १३ विवश १४ आकुल १५ स्वप्न-फल १६ प्राप्ति

तेरी आवाज़

रात सुनसान थी, बोझल थी फ़ज़ा की[1] सांसें
रूह पे छाए थे बेनाम ग़मों के साये
दिल को ये ज़िद थी कि तू आए तसल्ली देने
मेरी कोशिश थी कि कमबख़्त को नींद आ जाये

देर तक आंखों में चुभती रही तारों की चमक
देर तक ज़ह्न[2] सुलगता रहा तनहाई में
अपने ठुकराये हुए दोस्त की पुरसिश[3] के लिए
तू न आई मगर इस रात की पहनाई[4] में

यूं अचानक तेरी आवाज़ कहीं से आई
जैसे परबत का जिगर चीर के झरना फूटे
या ज़मीनों की मोहब्बत में तड़प कर नागाह[5]
आसमानों से कोई शोख़ सितारा टूटे

शहद-सा घुल गया तल्ख़ावा-ए-तनहाई में[6]
रंग-सा फैल गया दिल के सियाह ख़ाने में[7]
देर तक यूं तेरी मस्ताना सदाएं[8] गूंजी
जिस तरह फूल चमकने लगें वीराने में

तू बहुत दूर किसी अंजुमने-नाज़[9] में थी
फिर भी महसूस किया मैंने कि तू आई है
और नग़्मों में छुपाकर मेरे खोये हुए ख़्वाब
मेरी रूठी हुई नींदों को मना लाई है

---

१ वातावरण की २ मस्तिष्क ३ हाल चाल पूछना ४ विशालता
५ सहसा ६ एकांत के कड़वेपन में ७ अंधेरे घर में ८ आवाज़ें
९ नाज़ों भरी महफ़िल

रात की सतह पे[1] उभरे तेरे चेहरे के नुकूश[2]
वही चुपचाप-सी आखे, वही सादा सी नजर
वही ढलका हुआ आचल, वही रफ्तार का खम[3]
वही रह-रह के लचकता हुआ नाजुक पैकर[4]

तू मेरे पास न थी फिर भी सहर[5] होने तक
तेरा हर सास मेरे जिस्म को छूकर गुजरा
कतरा-कतरा तेरे दीदार[6] की शबनम टपकी
लम्हा-लम्हा[7] तेरी खुशबू से मुअत्तर[8] गुजरा

अब यही है तुझे मन्जूर तो ऐ जाने-बहार[9]
मै तेरी राह न देखूगा सियाह रातो म
ढूढ लेगी मेरी तरसी हुई नजरे तुझ को
नग्मा-ओ-शे'र की उमडी हुई बरसाता म

अब तेरा प्यार सतायेगा तो मेरी हस्ती
तेरी मस्ती भरी आवाज मे ढल जायेगी
और ये रूह जो तेरे लिए बेचैन सी है
गीत बनकर तेरे होटो पे मचल जायेगी

तेरे नग्मात[10], तेरे हुस्न की ठडक लेकर
मेरे तपते हुए माहौल[11] म आ जायेंगे
चन्द घडियो के लिए हो कि हमेशा के लिए
मेरी जागी हुई रातो को सुला जायेंगे

---

१ सतह पर २ नैन नक्श ३ चाल की लचक ४ शरीर ५ सुबह
६ दर्शन ७ प्रत्येक क्षण ८ सुगंधित ९ बहार के प्राण १० गीत
११ वातावरण

गजल

हर कदम मरहला-ए-दारो-सलीब[1] आज भी है
जो कभी था वही इंसा का नसीब आज भी है

जगमगाते हैं उफक पार[2] सितारे लेकिन
रास्ता मंजिले हस्ती का मुहीब[3] आज भी है

सरे-मकतल[4] जिन्हे जाना था वो जा भी पहुचे
सरे मिंबर[5] कोई मोहतात[6] खतीब[7] आज भी है

अहले-दानिश ने[8] जिसे अमर-ए-मुसल्लम[9] माना
अहले दिल के लिए वो बात अजीब आज भी है

वो तेरी याद है या मेरी अजीयत - कोशी[10]
एक नश्तर-सा रगे जां के[11] करीब आज भी है

कौन जाने ये तेरा शायरे-आशुफ्ता-मिजाज[12]
कितने मगरूर खुदाओं का रकीब[13] आज भी है

---

१ फांसियों की कठिन मंजिल २ क्षितिज पार ३ भयानक ४ वध स्थान में ५ चबूतरे पर ६ सावधान (चालाक) ७ उपदेशक ८ बुद्धिजीवियों ने ९ अकाट्य सिद्धांत १० कष्ट प्रियता ११ शाह रग के १२ खिन्न स्वभाव वाला शायर १३ प्रतिद्वंद्वी

वफादारी

खूने-जमहूर[1] मे भीगे हुए परचम[2] लेकर
मुझसे अफराद[3] की शाही ने वफा मागी है
सुबह के नूर पे[4] ताअज़ीर[5] लगाने के लिए,
शब की[6] सगीन[7] सियाही ने वफा मागी है

और ये चाहा है कि मै काफला-ए-आदम को[8]
टोकने वाली निगाहो का मददगार बनू
जिस तमव्वुर से[9] चिरागा[10] है सरे-जादा-ए-जीस्त[11]
उस तसव्वुर की हजीमत का[12] गुनहगार बनू

ज़ुल्म-पर्वर्दा[13] कवानीन[14] के ऐवानो से[15]
बेडिया तकती है ज़जीर सदा[16] देती है
ताके-तादीब से[17] इन्साफ के बुत घूरते है
मसनदे - अद्ल[18] से शमशीर सदा देती है

लेकिन ऐ अज़मते - इन्सा के[19] सुनहरे ख्वाबो
मैं किसी ताज की सतवत का[20] परस्तार[21] नही
मेरे अफकार का[22] उनवाने-इरादत[23] तुम हो
मै तुम्हारा हू—लुटेरो का वफादार नही

---

१ जनता के लहू मे २ झडे ३ व्यक्तियो की (व्यक्तिगत) ४ प्रकाश पर ५ सज़ा ६ रात की ७ कडी, भयकर ८ इसानियत के काफले को ९ कल्पना से १० प्रकाश ११ जीवन रूपी राह पर १२ पराजय का १३ अत्याचार के पाले हुए १४ कानूनो के १५ महलो से १६ आवाज़ १७ शिक्षा के ताक्चे से १८ न्याय के सिंहासन से १९ मानव की महानता के २० दबदबे या धाक का २१ उपासक २२ काव्य का २३ वास्तविक दीपक

अजनबी बन जायें

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जायें हम दोनो

न मै तुमसे कोई उम्मीद रक्खू दिल-नवाज़ी की
न तुम मेरी तरफ देखो गलत-अंदाज़[1] नज़रो से
न मेरे दिल की धडकन लडखडाए मेरी बातो मे
न जाहिर हो तुम्हारी कश्मकश का राज नजरो से

तुम्हे भी कोई उलझन रोकती है पेश कदमो से[2]
मुझे भी लोग कहते हैं कि ये जल्वे पराए हैं
मेरे हमराह भी रुसवाइया है मेरे माज़ी की[3]
तुम्हारे साथ भी गुज़री हुई रातो के साए हैं

तअारुफ[4] रोग हो जाये तो उसको भूलना बेहतर
तअल्लुक[5] बोझ बन जाये तो उसको तोडना अच्छा
वो अफसाना जिसे तक्मील तक[6] लाना न हो मुमकिन
उसे इक खूबसूरत मोड देकर छोडना अच्छा

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जायें हम दोनो

---

१ अमात्पादक २ आग बढने से ३ अतीत की ४ परिचय
५ सम्बन्ध ६ पूर्ति तक

मेरे ग्रहद* के हसीनो !

वो सितारे जिन की खातिर कई बेकरार सदिया
मेरी तीरा-बख्त[1] दुनिया म सितारावार[2] जागी
कभी रिफग्रतो पे[3] लपकी कभी वुसग्रतो से[4] उलझी
कभी सोगवार[5] सोईं कभी नग्मावार[6] जागी

वो बुलद - बाम[7] तारे वो फलक मुकाम[8] तारे
जो निशान देके ग्रपना रहे बेनिशा हमेशा
वो हसी, वो नूरजादे[9] वो खला के[10] शाहजादे
जो हमारी किस्मतो पर रहे हुक्मरा हमेशा

जिन्हे मुजमहिल[11] दिलो ने ग्रब'दी[12] पनाह जाना
थके-हारे काफलो ने जिन्हे खिज्रे-राह[13] जाना
जिन्हे ग्राशिको ने चाहा कि फलक से तोड लायें
किसी राह मे बिछाये किसी सेज पर सजाये

जिन्हे कमसिनो से[14] चाहा कि लपक के प्यार करलें
जिन्हे महवशो ने[15] मांगा कि गले का हार करलें
जिन्हे बुतगरो ने[16] चाहा कि सनम[17] बनाके पूजें
ये जो दूर के हसी है इन्हे पास लाके पूजें

---

* युग के

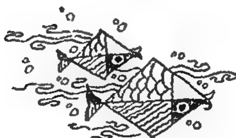
१ ग्रधकार पूर्ण २ सितारो की तरह ३ ऊचाइया पर ४ विशालताग्रो से ५ निराश, खिन्न ६ गीत गाती हुई (ग्राशापूर्ण) ७ ऊचे स्थान वाले ८ ग्राकाश वासी ९ प्रकाश पुत्र १० (विशाल) शून्य के ११ निढाल १२ स्थायी १३ पथ प्रदर्शक १४ ग्रबोध बालको ने १५ चाद जैसी सुदरियो ने १६ मूर्तिकारो ने १७ मूर्तिया

जिन्हे मुतरिबो ने[१] मागा कि सदाओ म[२] पिरो लें
जिन्हे शायरो ने चाहा कि खयाल मे समो लें
जो हमारी दस्तरस से[३] रहे दूर-दूर अब तक
हमे देखते रहे हैं जो ब-सद-गरूर[४] अब तक

मेरे अहद के हसीनो वो नज़र-नवाज[५] तारे
मेरा दौरे-इश्क-पर्वर[६] तुम्हे नज्र[७] दे रहा है
वो जुनूं[८] जो आबो-आतिश को[९] असीर[१०] कर चुका था
वो खला की[११] वुसअतो से[१२] भी खिराज ले रहा है

मेरे साथ रहने वालो मेरे बाद आने वालो
मेरे दौर का ये तोहफा तुम्हे साजगार आए
कभी तुम खला से गुज़रो किसी सीमतन की[१३] खातिर
कभी तुमको दिल म रख कर कोई गुल-अज़ार[१४] आए

(जनवरी, १९५९)



१ गायकों ने २ आवाजो म ३ पहुच से ४ अत्यन्त घमड के साथ ५ मनोरम ६ प्रेम पालक युग ७ भेंट ८ उन्माद ९ पानी और आग को १० बन्दी या बस में ११ शून्य की १२ विशालताओं से १३ रजत-बदन (प्रेयसी) १४ पुष्प-वर्ण (प्रेमी)

परछाइयां

जवान रात के सीने पे दूधिया आंचल
मचल रहा है किसी ख्वाबे-मरमरी की[1] तरह
हसीन फूल, हसी पत्तिया, हसी शाखें
लचक रही है किसी जिस्मे-नाज़नी की[2] तरह
फज़ा म घुल से गये है उफक़ के[3] नम खुतूत[4]
ज़मी हसीन है, ख्वाबो की सरज़मी की तरह

तसव्वुरात की[5] परछाइयाँ उभरती है

कभी गुमान[6] की सूरत कभी यकी की तरह
वो पेड जिन के तले हम पनाह लेते थे
खडे है आज भी साकित[7] किसी अमी की[8] तरह

इन्ही के साये मे फिर आज दो धडकते दिल
खमोश होटो से कुछ कहने सुनने आये हैं
न जाने कितनी कशाकश से[9], कितनी काविश से[10]
ये सोते - जागते लम्हे चुराके लाये हैं

यही फज़ा थी, यही रुत, यही ज़माना था
यही से हमने मुहब्बत की इब्तिदा की[11] थी
धडकते दिल से, लरज़ती हुई निगाहो से
हुजूरे-गैब मे[12] नन्ही सी इल्तिजा की थी

कि आरज़ू के कवल खिल के फूल हो जायें
दिलो नज़र की दुआये कबूल हो जायें

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है

---

१ मरमर ऐसे (सुन्दर) सपने की २ सुन्दरी के बदन की ३ क्षितिज के ४ रेखायें, नैन नक्श ५ कल्पना की ६ भ्रम ७ चुपचाप ८ साक्षी ९, १० प्रयत्न से ११ प्रारम्भ १२ भगवान की सेवा म

तुम आ रही हो जमाने की आख से बचकर
नजर झुकाये हुए और बदन चुराये हुए
खुद अपने कदमो की आहट से झेंपती, डरती,
खुद अपने साये की जुबिश से खौफ खाए हुए
तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

रवा है छोटी सी कश्ती हवाओ के रुख पर
नदी के साज पे मल्लाह गीत गाता है
तुम्हारा जिस्म हर इक लहर के झकोले से
मेरी खुली हुई बाहो मे झूल जाता है
तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

मै फूल टाक रहा हू तुम्हारे जूडे मे
तुम्हारी आख मसर्रत से झुकती जाती है
न जाने आज मै क्या बात कहने वाला हू
जबान खुश्क है आवाज रुकती जाती है
तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

मेरे गले मे तुम्हारी गुदाज[1] बाहे है
तुम्हारे होटो पे मेरे लबो के साये है
मुझे यकी है कि हम अब कभी न बिछडेंगे
तुम्हें गुमान है कि हम मिलके भी पराये हैं।
तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

मेरे पलग पे बिखरी हुई किताबो को,
अदाए-अज्जो-करम से[2] उठा रही हो तुम
सुहाग-रात जो ढोलक पे गाये जाते हैं,
दबे सुरो मे वही गीत गा रही हो तुम
तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

१ सुडौल २ विनय और कृपा की अदा से

वो लम्हे कितने दिलकश थे वो घड़िया कितनी प्यारी थी,
वो सेहरे कितने नाज़ुक थे वो लड़िया कितनी प्यारी थी
बस्ती की हर-इक शादाब गली[1] ख्वाबो का जज़ीरा[2] थी गोया
हर मौजे नफ़स[3], हर मौजे सबा[4], नग्मो का ज़खीरा[5] थी गोया

नागाह[6] लहकते खेतो से टापो की सदायें आने लगी
बारूद की बोझल बू लेकर पच्छम से हवायें आने लगी
तामीर के[7] रोशन चेहरे पर तखरीब का[8] बादल फैल गया
हर गाव मे वहशत[9] नाच उठी, हर शहर म जगल फैल गया
मगरिब के मुहज्जब मुल्का से कुछ खाकी - वर्दी - पोश आये
इठलाते हुए मगरूर आये, लहराते हुए मदहोश आये
खामोश जमी के सीने मे खैमो की तनायें गड़ने लगी
मक्खन सी मुलायम राहो पर बूटो की खराश पड़ने लगी
फौजो के भयानक बैंड तले चर्खों की सदायें डूब गईं
जीपो की सुलगती धूल तले फूलो की कबायें[10] डूब गईं

इन्सान की कीमत गिरने लगी, अजनास के[11] भाओ चढने लगे
चौपाल की रौनक घटने लगी, भरती के दफ़ातर[12] बढने लगे
बस्ती के सजीले शोख जवा, बन-बन के सिपाही जाने लगे
जिस राह से कम ही लौट सके, उस राह प राही जाने लगे

इन जाने वाले दस्तो मे गैरत भी गई, बरनाई[13] भी
माओ के जवा बेटे भी गये, बहनो के चहेते भाई भी

बस्ती पे उदासी छाने लगी, मेलो की बहारें खत्म हुईं
आमो की लचकती शाखो से झूलो की कतारें खत्म हुईं

---

१ आनन्द दायक गली २ स्वप्नो का टापू ३ श्वास ४ हवा की लहर ५ भण्डार ६ अकस्मात ७ निर्माण ८ ध्वस का ९ बबरता १० आवरण ११ अनाजो के १२ दफ्तर १३ जवानी

धूल उडने लगी बाजारो मे, भूख उगने लगी खलियानो मे
हर चीज दुकानो से उठकर, रूपोश हुई तहखानो में

बदहाल घरो की बदहाली, बढते-बढते जजाल बनी
महँगाई बढकर काल बनी, सारी बस्ती कगाल बनी

चरवाहिया रस्ता भूल गइ, पनहारिया पनघट छोड गई
कितनी ही कँवारी अबलायें, मा-बाप की चौखट छोड गई

इफलास जदा दहकानो के[१] हल-बैल बिके, खलियान बिके
जीने की तमन्ना के हाथो, जीने ही के सब सामान बिके

कुछ भी न रहा जब बिकने को जिस्मो की तिजारत होने लगी
खलवत मे[२] भी जो ममनूअ[३] थी वो जलवत मे[४] जसारत[५]
होने लगी

तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

तुम आ रही हो सरे-आम बाल बिखराये
हजार गोना मलामत का बार उठाये हुए

हवस-परस्त[६] निगाहो की चीरा-दस्ती से[७]
बदन की झेपती उरियानिया[८] छुपाए हुए

तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

१ निर्धनता के मारे किसानो के २ एकांत मे ३ निषिद्ध ४ खुले आम
५ धृष्टता ६ लोलुप ७ उद्दण्डता ८ नग्नताएँ

मैं शहर जाके हर इक दर[1] पे झाँक आया हूँ
किसी जगह मेरी मेहनत का मोल मिल न सका
सितमगरों के सियासी कमारखाने में[2],
अलम-नसीब फिरासत[3] का मोल मिल न सका

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं

तुम्हारे घर में कयामत का शोर बर्पा है
महाजे-जंग से[4] हरकारा तार लाया है
कि जिसका ज़िक्र तुम्हें जिन्दगी से प्यारा था
वो भाई 'नर्गा-ए-दुश्मन' में[5] काम आया है

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं

हर एक गाम पे[6] बदनामियों का जमघट है
हर एक मोड़ पे रुसवाइयों के मेले हैं
न दोस्ती, न तकल्लुफ, न दिलबरी, न ख़ुलूस[7]
किसी का कोई नहीं आज सब अकेले हैं

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं

वो रहगुज़र जो मेरे दिल की तरह सूनी है
न जाने तुमको कहां ले के जाने वाली है
तुम्हें खरीद रहे हैं जमीर के कातिल
उफक पे खूने-तमन्नाए-दिल की[8] लाली है

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं

---

१ दरवाजा २ जुआखाने में ३ शोक ग्रस्त विवेक ४ युद्ध-क्षेत्र से
५ शत्रु के घेरे में ६ कदम पर ७ शुद्ध हृदयता ८ मनोकामना के रक्त की

सूरज के लहू मे लिथड़ी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे
चाहत के सुनहरे ख्वाबो का अजाम है अब तक याद मुझे

उस शाम मुझे मालूम हुआ, खेतो की तरह इस दुनिया मे
सहमी हुई दोशीजाओ की[1] मुस्कान भी बेची जाती है
उस शाम मुझे मालूम हुआ, इस कारगहे - जरदारी मे[2]
दो भोली-भाली रूहो की पहचान भी बेची जाती है

उस शाम मुझे मालूम हुआ, जब बाप की खेती छिन जाये
ममता के सुनहरे ख्वाबो की अनमोल निशानी बिकती है
उस शाम मुझे मालूम हुआ, जब भाई जग मे काम आयें
सरमाये के कहबाखाने मे[3] बहनो की जवानी बिकती है

सूरज के लहू मे लिथड़ी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे
चाहत के सुनहरे ख्वाबो का अजाम है अब तक याद मुझे

तुम आज हजारो मील यहा से दूर कही तनहाई मे,
या बज्मे-तरब-आराई मे[4],
मेरे सपने बुनती होगी बैठी आगोश पराई मे।

और मैं सीने मे गम लेकर दिन-रात मशक्कत[5] करता हू,
जीने की खातिर मरता हू,
अपने फन को रुसवा करके अगियार का[6] दामन भरता हू।

मजबूर हू मै, मजबूर हो तुम, मजबूर ये दुनिया सारी है,
तन का दुख मन पर भारी है,
इस दौर मे[7] जीने की कीमत या दारो रसन[8] या ख्वारी है।

१ तरुण कुमारियो की २ पूंजीवाद के कारखाने मे ३ वेश्यालय मे
४ आनन्ददायक महफिल मे ५ परिश्रम ६ गरो का ७ काल मे ८ सूली

मे दारो-रसन तक जा न सका, तुम जहद की[1] हद तक आ न सकी,
चाहा तो मगर अपना न सकी,
हम तुम दो ऐसी रूहे हैं जो मजिले - तस्की[2] पा न सकी।

जीने को जिये जाते है मगर, सासो मे चितायें जलती है,
खामोश वफायें जलती हैं,
सगीन हकायक - जारो मे[3], ख्वाबो की रिदायें[4] जलती है।

और आज इन पेडो के नीचे फिर दो साये लहराये है,
फिर दो दिल मिलने आये हैं,
फिर मौत की आधी उट्ठी है, फिर जग के बादल छाये है।

मै सोच रहा हू इनका भी अपनी ही तरह अजाम न हो,
इनका भी जुनू[5] बदनाम न हो,
इनके भी मुकद्दर मे लिक्खी इक खून मे लिथडी शाम न हो।

सूरज के लहू मे लिथडी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे।
चाहत मे सुनहरे ख्वाबो का अजाम है अब तक याद मुझे॥

हमारा प्यार हवादिस की[6] ताब ला न सका,
मगर इन्हे तो मुरादो की रात मिल जाये।
हमे तो कश्मकशे-मर्गे-बेअमा[7] ही मिली,
इन्हे तो झूमती गाती हयात मिल जाये॥

---

१ सयाम २ शान्ति की मजिल ३ कठोर वास्तविकताओं की भूमि मे (ससार मे) ४ चादरें ५ उन्माद, प्रेम ६ दुर्घटनाओं की ७ बेपनाह मृत्यु की खीचातानी

बहुत दिनों से है ये मशगला[1] सियासत का,
कि जब जवान हों बच्चे तो कत्ल हो जायें।
बहुत दिनों से है ये खब्त[2] हुक्मरानों का,
कि दूर-दूर के मुल्कों में कहत बो जायें॥

बहुत दिनों से जवानी के ख्वाब वीरां हैं,
बहुत दिनों से मुहब्बत पनाह ढूंढती है।
बहुत दिनों से सितम-दीद शाहराहों में[3],
निगारे ज़ीस्त[4] की इस्मत पनाह ढूंढती है॥

चलो कि आज सभी पायमाल[5] रूहों से,
कहें कि अपने हर-इक ज़ख्म को ज़बां कर लें।
हमारा राज़, हमारा नहीं सभी का है,
चलो कि सारे ज़माने को राज़दां कर लें।

चलो कि चल के सियासी मुकामिरों से[6] कहें,
कि हम को जंगो-जदल के चलन से नफरत है।
जिसे लहू के सिवा कोई रंग रास न आये,
हमें हयात के[7] उस पैरहन से[8] नफरत है॥

कहो कि अब कोई कातिल अगर इधर आया,
तो हर कदम पे ज़मीं तंग होती जायेगी।
हर एक मौजे-हवा[9] रुख बदल के झपटेगी,
हर एक शाख रगे-संग[10] होती जायेगी॥

---

१ मनोविनोद २ उन्माद ३ अत्याचार पीड़ित राजपथों में ४ जीवन रूपी प्रेयसी ५ कुचली हुई ६ जूएबाज़ों से ७ जीवन के ८ लिबास से ९ हवा की लहर १० पत्थर की रग

ये कह दें,
उठो कि आज हर इक जगजू से जत[1] है।
कि हमको काम की खातिर कलो की ह ीक नही,
हम किसी की जमी छीनने का ग्रत है ।।
हमें तो अपनी जमी पर हलो की हा
ख न करे,
कहो कि अब कोई ताजिर इधर का । जायेगी ।
अब इस जा[2] कोई कवारी न बेची फसलें,
ये खेत जाग पडे, उठ खडी हुई ायेगी ।।
अब इस जगह कोई क्वारी न वेची
ाक की,
ये सरजमीन है गौतम की और ना कभी ।
इस अर्जे-पाक पे[3] वहशी न चल सकें[4] लिए,
हमारा खून अमानत है नस्ले-नौ के कभी ।।
हमारे खून प लश्कर न पल सकेंगे
ाश रहें,
कहो कि आज भी हम सब अगर खमो नहीं ।
तो इस दमकते हुए खाकदा की[5] खैर ो से,
जुनू की[6] ढाली हुई एटमो बला नही ।।
जमी की खैर नही आसमा की खैर
बार,
गुजश्ता[7] जग मे घर ही जले मगर इस आयें ।
अजब नही कि ये तनहाइया भी जल बार,
गुजश्ता जग मे पैकर[8] जले मगर इस ायें ।।
अजब नही कि ये परछाइया भी जल ज

४ नई पीढ़ी के

१ आवश्यकता २ जगह ३ पवित्र भूमि पर
५ धरती की ६ उन्माद की ७ पिछली ८ शरीर

बहुत दिनों से है ये मशगला[1] सियासत का,
कि जब जवान हों बच्चे तो कत्ल हो जायें।
बहुत दिनों से है ये ख़ब्त[2] हुक्मरानों का,
कि दूर-दूर के मुल्कों में क़हत बो जायें॥

बहुत दिनों से जवानी के ख्वाब वीरां हैं,
बहुत दिनों से मुहब्बत पनाह ढूंढती है।
बहुत दिनों से सितम-दीदा शाहराहों में[3],
निगारे-जीस्त[4] की इस्मत पनाह ढूंढती है॥

चलो कि आज सभी पायमाल[5] रूहों से,
कहें कि अपने हर-इक जख्म को जबां कर लें।
हमारा राज, हमारा नहीं सभी का है,
चलो कि सारे जमाने को राजदां कर लें।

चलो कि चल के सियासी मुकामिरों से[6] कहें,
कि हम को जंगो-जदल के चलन से नफरत है।
जिसे लहू के सिवा कोई रंग रास न आये,
हमें हयात के[7] उस पैरहन से[8] नफरत है॥

कहो कि अब कोई कातिल अगर इधर आया,
तो हर कदम पे जमीं तंग होती जायेगी।
हर एक मौजे-हवा[9] रुख बदल के झपटेगी,
हर एक शाख रगे संग[10] होती जायेगी॥

---

१ मनोविनोद २ उन्माद ३ अत्याचार पीड़ित राजपथों में ४ जीवन रूपी प्रेयसी ५ कुचली हुई ६ जुएबाजों से ७ जीवन के ८ लिबास से ९ हवा की लहर १० पत्थर की रग

उठो कि आज हर इक जगजू से ये कह दें,
कि हमको काम की खातिर कलो की हाजत[1] है।
हमे किसी की जमी छीनने का शौक नही,
हमें तो अपनी ज़मी पर हलो की हाजत है॥

कहो कि अब कोइ ताजिर इधर का रुख न करे,
अब इस जा[2] कोई कवारी न बेची जायेगी।
ये खेत जाग पडे, उठ खडी हुई फसलें,
अब इस जगह कोई क्यारी न बेची जायेगी॥

ये सरजमीन है गौतम की और नानक की,
इस अर्जे-पाक पे[3] वहशी न चल सकेंगे कभी।
हमारा खून अमानत है नस्ले-नौ के[4] लिए,
हमारे खून पे लश्कर न पल सकेंगे कभी॥

कहो कि आज भी हम सब अगर खमोश रहे,
तो इस दमकते हुए खाकदा की[5] खैर नही।
जुनू की[6] ढाली हुई एटमी बलाओ से,
जमी की खैर नही आसमा की खैर नही॥

गुजश्ता[7] जग मे घर ही जले मगर इस बार,
अजब नही कि ये तनहाइया भी जल जायें।
गुजश्ता जग म पैकर[8] जले मगर इस बार,
अजब नही कि ये परछाइया भी जल जायें॥



१ आवश्यकता २ जगह ३ पवित्र भूमि पर ४ नई पीढ़ी के
५ धरती की ६ उन्माद की ७ पिछली ८ शरीर